वर्ष 26 | आषाढ़-श्रावण | अगस्त-2021 | अंक 08 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
मूल्य 10/- रुपये
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक श्री विशेषांक

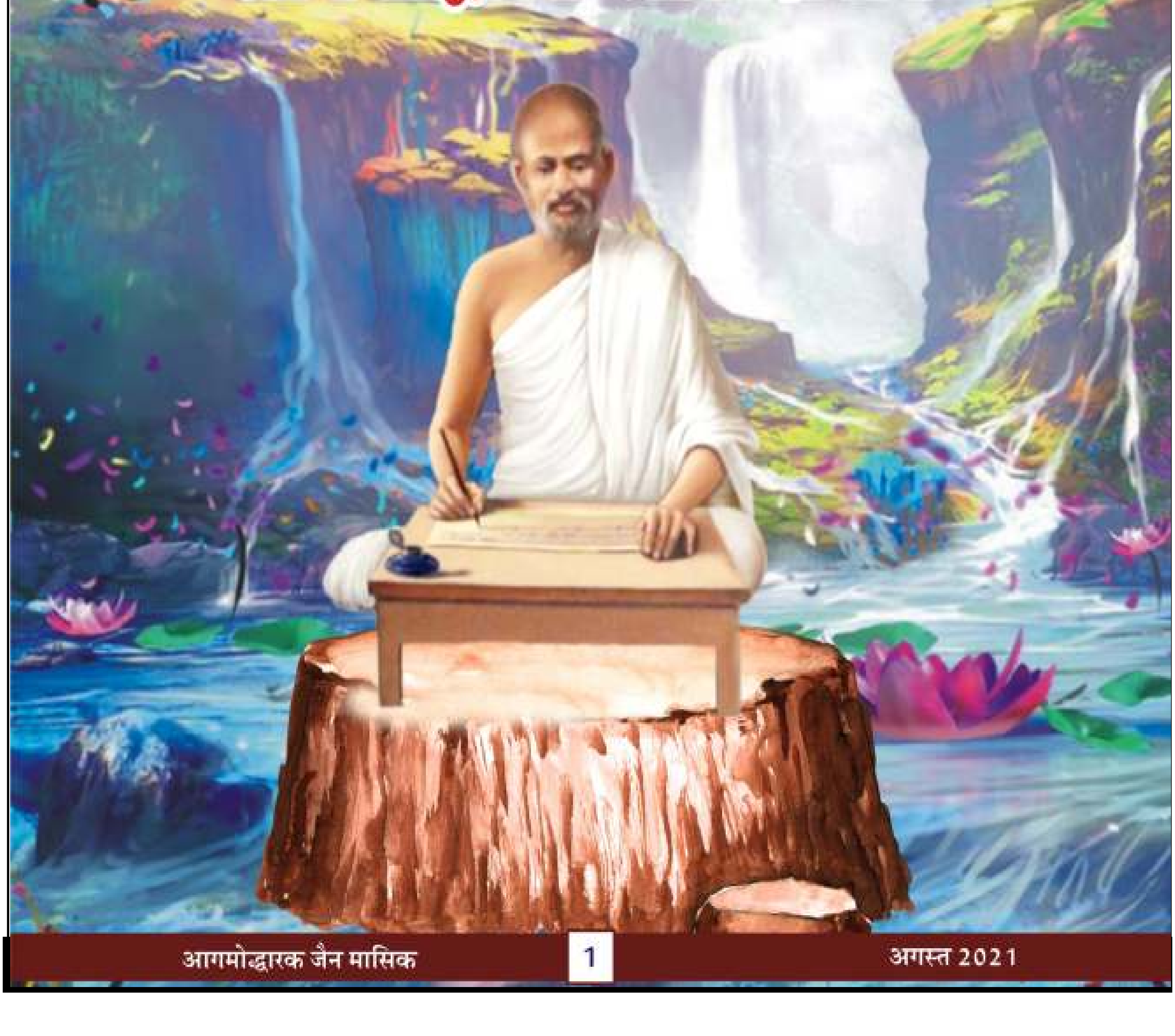

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

कामुकता के समान कोई व्याधि नहीं। क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं। अज्ञान के समान कोई शत्रु नहीं। धैर्य के समान कोई मित्र नहीं। चिंता के समान कोई विष नहीं। ज्ञान के समान कोई हितैषी नहीं। विद्या के समान कोई शुभचिंतक नहीं। अपने को ज्ञानी समझने से बढ़कर कोई मूढ़ता नहीं, धर्म के समान कोई सच्चा साथी नहीं और संतोष के समान संसार में कोई सुख नहीं।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जो सहस्सं-सहस्साणं, मासे मासे गवं दए।
तस्सावि संजमो से ओ, अदिंतस्स वि किंचणं॥

जो प्रतिदिन दस-दस लाख गायों का दान करते है, उसकी अपेक्षा कुछ भी नहीं देने वाले संयमी का श्रेष्ठ होता है। अर्थात् संयम की आध्यात्मिक मूल्यवत्ता बहुत बड़ी है।

- उत्तरा. सूत्र, 9.40

पाथेय

हे नाथ, तुम उस सच्चे प्रेम को धरती पर होने दो उत्पन्न जो समस्त कष्टों का करता है निवारण। उस अमर शान्ति को प्रस्थापित होने दो। जो सच्ची संकल्प शक्ति का है आधार स्थल। हमें वह परिपूर्ण ज्ञान प्रदान करो जो समस्त अज्ञानान्धकार का करता है हनन। इस अतिभौतिक देह सत्ता की अतल गहराईयों से लेकर इसके लघुतम कोषाणुओं में तुम गतिवान हो, तुम ही इसमें निवास करते हो और इसमें स्पन्दित होते हो और सब तत्वों को गतिमयता भी तुम्हीं प्रदान करते हो। प्रभु यह समूची सत्ता अब एक पूर्ण इकाई है जो अनन्त रुपों वाली है, सुसंगठित है, सुसम्बद्ध है और अनुप्राणित हो रही है एक प्रबल एवं अद्वितीय स्पन्दन द्वारा और वह स्पन्दन, प्रभु तुम हो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 आषाढ़-श्रावण अगस्त 2021 अंक-8

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- आध्यात्मिक महोत्सव : चार्तुमास -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- करुणा सागर पूज्य श्री सागरानन्द सूरीश्वरजी म.सा.- प्रभा जैन लोगस्स के तीन पद में नवधा भक्ति	6
5- बाईस अभक्ष्य पदार्थ....-आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	7-8
6- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा.	9-11
7- गुरुदेव का जाना और उत्तरदायित्व का बोध, गुरुदेव की सीख	12
8- मैं अंजना-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	13-15
9- गीतार्थ गिरि के शिखर श्रृंगार.... - ऋषभ जैन, भाई-बहिन का प्यार.... -डॉ. दिलीप धीग, संत समागम	16-18
10- सागर आ रहा है, धन्य भाग्य इस भूमि के....	19
11- शारदानंद सागरजी, एक अद्भूत छःरि पालित संघ	20
12- सागर का जन्म महोत्सव- सूरत में एक अद्भूत प्रसंग, मगनभाई का दीक्षा प्रेम, पहचान	21
13- पू. श्री सागरजी महाराज की जीवन कहानी....	22
14- आगमोद्धारकश्री की जीवन महक- चंद्रप्रभासागर (चित्रभानु) मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज	23
15- महिमा त्राता सद्गुरु की- इन्द्रचन्द्र दुधेड़िया, गुरुकुलवास, आज्ञा	24-27
16- वर्गपहेली- 315 - जयंतीलाल जैन	28
17- ज्ञान गंगोत्री- 315 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	29
18- शासन-समाचार	30-41
19- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

मेरे आराध्य : आगमोद्धारकश्रीजी महाराजा

भारत *भूमि पर सुधारस की वर्षा करनेवाले अनेक महार्षियों की सौगात हमें मिली है उनकी साधना और चर्चा ने संसार में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर दिये है, आज वो भक्तों के भावों में भगवान जैसे बस गये है, उनके त्यागपूर्ण जीवनशैली ने और कर्म प्रधान जीवन ने देश को ऐसी विरासत सौंपी है जिसने अनगिनत भक्तों के मन में धर्म को जो बीजारोपण किया है वह आज वटवृक्ष बन गया है। अपने संयम पूर्ण जीवन एवं सिद्धांतों तथा वाणी के साथ अपनी खोजपूर्ण प्रवृत्ति से जैन धर्म को बहुत ऊंचाईयां प्रदान की है। हाँ ! मैं आगमवेत्ता आगमोद्धारक शिखर महापुरुषी मेरी आस्था के शिखर महापुरुष मेरी आस्था के शिखर संत आगमोद्धारक आचार्य भगवंत श्री पूज्यपादश्री सागरानंदसूरीजी महाराजा, श्री आनंद सागरसूरीजी महाराजा की ही बात कर रहा हूं।*

45 आगम ग्रंथों का भव्य वरसा हमें सौंपनेवाले पूज्यपादश्री कलम से आगमों का जो ज्ञान जैन जगत को प्राप्त हुआ है वह अमूल्य है। पूज्यपादश्री को पिछले 30-35 वर्षो से मैं जानने का प्रयत्न कर रहा है पर विराट महापुरुष हर बार कुछ नया ज्ञान, जानकारी देते है, मैं आश्चर्य चकित हूं कि- ऐसे गुरु का अगर मैं दर्शन कर पाता तो कितना सौभाग्यशाली होता ? यह परम सौभाग्य है कि जैन कुल में जन्म लेकर ऐसे पुण्यशाली महान आत्मन् का परिचय मिला। पूज्यश्री के कार्यो का विश्लेषण करने या अपने आपको धन्य मानता हूं कि- ऐसे आगमोद्धारकश्री के बारे लिखने, जानने में, मेरे हाथों की लकीर को संसार से धर्माराधना से जोड़ दिया। भटकते कदमों को मंदिर की तरफ मोड़ दिया, विषय भोगों से दूर कर धर्मचिंतन का आधार दिया ताकि भव सागर पार कर सकूं। यह पूज्यश्री की बलिहारी है।

नादान है वो लोग जो पत्थरों में परमात्मा को तलाशते है, मुझे तो पूज्यपादश्री के आगम योगदान को देखकर लगता है कि वे ही ज्ञान के रुप में ऐसे परमात्मा है जिन्होंने परमात्मा की वाणी का रसावदान करवाकर हमें साक्षात परमात्मा के दर्शन करवा दिये है। लोग क्यों तीर्थयात्रा-वंदना करने आते है, अरे आगमोद्धारकश्री तो स्वयं ही तीर्थ स्वरुप है, पूज्यश्री को वंदन तीर्थंकर का वंदन बन जाता है, परमात्मा तो निराकार पर पूज्यश्री मैं साक्षात् साकार परमात्मा के दर्शन होते है। शब्दों से आचार्यश्री को समझाना इतना आसान नहीं है लेकिन पूज्यपादश्री के आगम कार्य, चरित्र, उनका जीवन अनुभव जब हम देखते, समझते है तो आगमोद्धारकश्री का विराट व्यक्तित्व हमारे सामने प्रकट हो जाता है। पूज्यश्री के बारे में जब हम जानते है तो अनायस मन कह उठता है- ***''चिदानन्दमय देह तुम्हारी''*** *देवऋषि, राजऋषि, ब्रह्मार्षि अनगर निग्रंथ का समन्वित रुप आगमोद्धारकश्री में सहज रुप से दिखाई देता है, सत्य की रक्षा, सम्मान की चिंता, सर्वहित का ध्यान रखने के साथ धर्म और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन जीनेवाले पूज्यपादश्री के जीवन में परमात्म स्वरुप सहज रुप से हम अनुभव करें।*

जैनत्व को आगम का अद्भूत भण्डार देकर आगमोद्धारकश्री ने परमात्मा की वाणी से हमारा परिचय करवाया है, आपको आगमोद्धारक के नाम से ही जाना पहचाना जाने लगा है, पूज्यश्री की सोच बहुत व्यापक थी यह आपके कार्यो द्वारा प्रदर्शित होता है अनावश्यक परम्पराओं रुढ़ियों में आपका विश्वास नहीं था। चाहे धर्म का मसला हो या सामाजिक सरोकार का विषय, आपश्री प्रत्येक तथ्य का आपश्री आगम सम्मत पूर्ण प्रमाणिक उत्तर देते थे, उन्होंने हमेशा ही सत्य का आलंबन लिया। यही नहीं एक जैन महर्षि होने के बाद भी आपश्री में देशभक्ति की प्रगाढ़ भावना थी। देश के प्रति भक्ति भाव आप में कूट-कूट कर भरा हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन के साथ आपश्री ने लोगों की सहायता के लिये फण्ड एकत्रित करवाकर बहुत सहायता करवाई। उनका भाव देश के लिये समर्पित था।

आगमोद्धारकश्री उन विरले संतों में से है जिन्होंने दीक्षित होते ही कुछ ही समय में अपने आगम कार्यो से जैन जगत में उच्च स्थान पा लिया था। समकालिन संतों में उस समय जैनत्व से संबंधित सभी निर्णय लेने में आपकी विशिष्टभूमिका रहती थी और आपके द्वारा तर्क पूर्ण और तथ्यपूर्ण सुझाये गये समाधान को मान्य किया जाता था। किसी भी धार्मिक वाद-विवाद में आपको पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि आपश्री ने जितना बोला नहीं उससे अधिक ग्रंथों का सर्जन किया है, हर वक्त आपश्री की लेखनी चलती रहती थी, अपनी कलम से आपश्री ने कई संशय को समाधान में बदल दिया, धर्म अध्यात्म के साथ आपश्री ने लोकोपयोगी विषय पर लिखा। आपका लेखन जैन जगत की सर्वकालिक अनमोल निधि बन गया है।

पूज्यश्री ने यह स्वप्न प्रकल्प की आगम ग्रंथ किसी भी रुप में सुरक्षित रहना चाहिये, आपके द्वारा और बाद में आपके शिष्य परिवार के द्वारा अनेक स्थानों पर आगम मंदिर का निर्माण करवाकर साकार किया गया है। यदि गुरुदेव के शिष्य-प्रशिष्यों के बारे में बात की जाये तो उन्होंने पूज्यश्री के नाम को अपने दर्शन, ज्ञान,चारित्र, तप के बल अमर कर दिया है। पूज्यश्री के व्यक्तित्व ही ऐसा चमत्कारी और प्रभावशाली रहा है कि एक बार जो आपके सम्पर्क में आया वह भी महान बन गया है आज सागर श्रमण समुदाय ने जैन जगत को जो उपलब्धियां दी है वह अजर, अमर और जैन जगत की अनमोल धरोहर बन गई है।

तो आईये ! हम सभी ऐसे पूज्यपादश्री का मंगल स्मरण करते हुए आपश्री के जीवन निर्माण के कार्यो के प्रति समर्पित बने। यही अभिलाषा !

✽ डॉ. सुभाष जैन

करुणा सागर पूज्य श्री सागरानन्द सूरीश्वरजी म.सा.

✻ प्रभा जैन, देवास

हमारी भारत भूमि महान गौरवशालिनी है, इस अवनीतल पर अनेक उच्च पवित्र महान विभूतियाँ अवतरित हो चुकी है, उन्होंने कठिन साधना के द्वारा कई सिद्धियां प्राप्त की है और अपनी आत्मा को उज्जवल बनाया। अपने ज्ञान के आलोक से जन-जन के मन को आलोकित किया है। ऐसे महापुरुषों का जीवन इतना प्रकाशमान होता है कि उन्हें हम हमेशा याद करते हैं।

ऐसे ही आध्यात्म योगी, आदर्श व्यक्तित्व के धनी, करुणा के सागर पूज्य श्री 1008 आचार्य भगवंत सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा. थे। उन्होंने इस धरा पर अवतरित होकर जिनशासन को गौरान्वित किया। आप बचपन से ही होनहार बालक थे। कुशाग्र बुद्धि, करुणा के अवतार, सहिष्णुता, निर्भय, ओजस्विता के गुणों से परिपूर्ण थे। आपका जीवन गंगा सा निर्मल, मेरु से उच्च, समुद्र सा गंभीर, सूर्य सा तेजस्वी मोती सा उज्जवल था।

मैंने आपके बारे में **''आगमोद्धारक पत्रिका''** के माध्यम से पढ़ा, आपके गुणों की छबि मन-मस्तिष्क में समा गई।

आपके जीवन में कई प्रसंग है, जिससे मैं प्रभावित हुई।

1- आप करुणा के भंडार थे, एक बार एक नूतन दीक्षित मुनि जो योग में थे और उनकी गोचरी शेष रह गई, ज्ञान के अनुभव से आपने उस मुनि की व्यथा को जान लिया, आप उसी समय उस मुनि के पास गए और बड़े स्नेह के साथ पूछा क्या बात है मुनिवर ? उन्होंने कारण बताया और रो पड़े। दूसरे मुनिवर उस नूतन मुनि की शिकायत करने लगे। झूठे आहार का आपने उपयोग कर लिया व अन्य मुनियों को कहा- ''खबरदार यदि किसी ने इसे टोका तो'' इस समय पूज्य सूरीश्वरजी म.सा. के शब्द मुखरित हुए। धन्य है आपकी करुणा भावना को।

2- आपके गुरुदेव श्री झवेरसागरजी म.सा.जी के स्वर्गवास होने पर आप निराश हो गये, मुझे वाचना कौन देगा ? मैं आगम अध्ययन करना चाहता हूं, एक रात आपको स्वप्न आया- ''चिंता न करो वत्स'' तुम तो ''पूर्वजन्म के श्रुतधर हो'' तुमको जिन आगमों का अध्ययन करना हो उन्हें उच्चासन पर विराजमान कर गुरु की तरह वंदना करना और ''वायणा संदिसाहु, वायणा लइ़्शुं, वायणा प्रसाद करावशोजी का आदेश मानकर आगम पड़ना प्रारंभ कर देना।''

फिर क्या था ? आपने आयंबिल किया व दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन किया। यह थी आपकी गुरुभक्ति-

ध्यान मूलं गुरोमुर्ति, पूजामूलं गुरुर्पदं।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरुकृपा।।

आगम ग्रंथों का आपने 7 वाचनाओं के द्वारा 2,33,200 श्लोकों का अर्थरहित वाचन कर जिनशासन पर महान उपकार किया है।

3- आप संस्कृत के भी महान विद्ववान पंडित थे। आपने एक बार हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में वहां के पंडितों के आग्रह पर संस्कृत धाराप्रवाहबद्ध प्रवचन दिए। आपके प्रवचनों से प्रभावित होकर वहां पंडितों ने आपको ''शारदानंद'' कहकर पुकारा। वास्तव में आप माँ सरस्वती के साक्षात् नर अवतार थे।

4- एक बार जर्मनी की विदुषी क्राउन का भारत आगमन हुआ, जैन धर्म का अध्ययन करना उनका प्रमुख उद्देश्य था। डॉ.क्राउन ने पूज्य सागरजी म.सा.जी का पता लगाकर आपके दर्शन किये व कुछ जिज्ञासा के प्रश्नों के उत्तर पाकर समाधान किया। आपके उत्तरों से वह बहुत प्रभावित हुई और आपश्री को ''जंगम पुस्तकाल'' की उपाधि दी।

ऐसे आपके जीवन के कई प्रसंग है जो मन पर गहरी छाप देते है। ऐसे आगमवेत्ता आगमोद्धारक, आगम रत्नाकर, आगम ज्योतिर्धर, ध्यानस्थ आद्य पुरुष के चरणों में सादर सविधि श्रद्धायुक्त मेरा कोटि-कोटि वंदन, नमन्!

आपकी यश और कीर्ति आज भी अमर है और युगों तक अमर रहेगी।

सूख से कीर्ति भली, बिना पंख उड़ जाए।
सूख तो जाती रहे, कीर्ति कभी न जाए।।

लोगस्स के तीन पद में नवधा भक्ति

कित्तिय	**वंदिय**	**महिया**
1 **श्रवण**	4 **वंदन**	7 **दास्य**
2 **कीर्तन**	5 **अर्चन**	6 **संख्य**
3 **स्मरण**	6 **पाद सेवन**	9 **आत्म निवेदन**

बाईस अभक्ष्य पदार्थ....

✻ आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

जैन आचार्यों ने भोजन के विषय में बहुत ही सूक्ष्मता पूर्वक व्यापक दृष्टि से चिंतन किया है। उसमें अहिंसा की दृष्टि तो मुख्य है ही, साथ ही जिस भोजन से विचारों में तामसिकता व चंचलता बढ़ती हो, शरीर में रोग आदि उत्पन्न होने की संभावना रहती हो, उस दृष्टि से भी विचार कर धार्मिक, मानसिक तथा शारीरिक तीनों प्रकार के आरोग्य व स्वस्थता की दृष्टिसे कुछ पदार्थों को अभक्ष्य कोटि का बताया है। उनको खाना सामान्यतः प्रत्येक गृहस्थ के लिए वर्जनीय है, किन्तु जैन श्रावक को तो उनका अवश्य ही परित्याग करना चाहिये। जैन आचार्यों ने उन 22 प्रकार के अभक्ष्य (नहीं खाने योग्य) पदार्थों की सूचि इस प्रकार दी है-

महाविगय- ''विगय'' का अर्थ है जिसके सेवन से जीव के भाव विकृत हो जायें। दूध, दही, घी, तेल, गुड़, शक्कर और तली हुई वस्तुएँ आदि भी विगय है, किन्तु यह अभक्ष्य नहीं है। निम्न चार महाविगय अधिक विकार वर्द्धक होने से अभक्ष्य हैः-

1- मांसः- विभिन्न जीवधारियों का घात कर ही मांस प्राप्त किया जाता है। मांस दिखने में भी घृणास्पद दिखता है। इसके लिये बेहद क्रूरता और निर्दयतापूर्वक जीवों का वध किया जाता है। वह मुख्यतः तीन प्रकार के जीवों से प्राप्त होता है 1- जलचर- मछली आदि। 2- स्थलचर- पाड़ा, बकरा, हिरण, गाय, भैंस, सूअर आदि 3- खेचर- चिड़िया, मुर्गी, कबूतर आदि। इनके अंडे व मांस आदि। मांसाहार का त्याग करने वालों को अंडा, अंडे के रस से बनी चाकलेट, बिस्किट, आईसक्रीम, चुंइगम आदि का उपयोग भी नहीं करना चाहिये। इनमें मछलियों का आटा तथा चर्बी आदि मिलती है।

मांस खाने से अनेक प्रकार के जटिल रोग हो जाते हैं। लगभग 160 प्रकार की बीमारियाँ मांसाहार से होती है।

2- मदिराः- मदिरा का निर्माण अनेक वस्तुओं को सड़ाने से होता है। सड़ाने की प्रक्रिया में प्रतिक्षण बेइन्द्रिय आदि असंख्य जीव पैदा होते रहते हैं। उन सबके सहित मशीन से उस सड़न का रस निचोड़ने से अनेक जीवों की हिंसा होती है। मरिदापन अहिंसा, अरोग्य एवं नैतिक दृष्टि से त्याज्य है। हमारे शरीर का लीवर जो दूसरे 500 प्रकार के जहर का शोधन कर सकता है, वह मदिरा पान से विकृत व निष्क्रिय हो जाता है।

3- मधु (शहद)ः- मधु प्राप्त करने की क्रिया के दौरान अनेक मक्खियों आदि को प्राणों से हाथ धोने पड़ते है। इसके अलावा जिस प्रकार किसी व्यक्ति का अनेक वर्षों तक अत्यन्त परिश्रम से संग्रह किया हुआ धन एक ही रात में चोर चुरा कर ले जाए तो उसको एवं उसके परिवारवालों को कितना भारी दुःख होता है, उसी प्रकार मक्खियों द्वारा बहुत परिश्रम से संचित मधु को उनको अत्यन्त कष्ट देकर हरण कर लिया जाए तो कितना दुःख होगा। कहते है- ''मधु'' मक्खियों के शरीर से निकला हुआ ''मल'' है। उसमें उनके मुंह की ''लार'' भी मिली रहती है। अतः यह घृणास्पद गर्हित अखाद्य है। इसके अतिरिक्त मधु में उसी वर्ण के असंख्य जीव पैदा होते हैं।

4- मक्खनः- मक्खन में छाछ में से निकलते ही अनेक सूक्ष्म जीव उत्पन्न हो जाते है। अतः हिंसा की दृष्टि से वह त्याज्य है तथा विकार वर्धक तो है ही।

सांयोगिक अभक्ष्य- जो वस्तु किसी अन्य संयोग के मिलने पर अभक्ष्य बन जाती है, वह सांयोगिक अभक्ष्य है, जैसे-

5- द्विदलः- जिस धान्य के दो दल बन जाते है, वह द्विदल है। जैसे- चना, मूंग, मटर, उड़्द, तुअर, चावल, मसूर आदि। इनके दाने तथा आटा आदि भी द्विदल में आता है। ध्यान रहे, अकेली दाले अभक्ष्य नहीं है, परन्तु जब यह दूध, दही आदि में मिला दी जाती है, तब इनमें सूक्ष्म बेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। उसे खाने से हिंसा का दोष लगता है। इसलिए यह सांयोगिक अभक्ष्य है। ये सूक्ष्म जीव जिस रंग की वस्तु होती है, उसी रंग के होते हैं। अतः अति सूक्ष्म होने से तथा रंग में मिल जाने से दिखाई नहीं पड़ते।

6- अचार अथाणाः- आजकल प्रायः बाजार का बना अचार अथाणा आदि खाने के लिए उपलब्ध होता है। पहली बात, यह प्रायः बाजार की सड़ी-गली, बासी वस्तुओं से बनाया जाता है। दूसरी बात, इसमें एसिड डालकर शीघ्र तैयार किया जाता है, यह एसिड पेट व आंतों के लिये भयंकर नुकसान कारक है। तीसरी बात, इसमें उसी रंग के सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती रहती है। इसका प्रयोग मात्र जीभ के स्वाद के लिये ही होता है। इस तरह यह सात्विकता व अहिंसा की दृष्टि से तो त्याज्य है ही आरोग्य दृष्टिसे भी हानिकारक है।

7- रात्रि भोजनः- जो भोजन दिन के समय सात्विक तथा भक्ष्य होता है, वही सूर्यास्त होने पर तामसिक तथा अभक्ष्य बन जाता है। सूर्य की उष्णता से उसमें जीवोत्पति नहीं होती, किन्तु रात को टेम्प्रेचर कम होने से भोजन में अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होने लगती है तथा अंधकार अथवा कृत्रिम प्रकाश में अनेक छोटे-छोटे त्रास जीव भोजन में गिरते रहते हैं। जो दिखाई नहीं देते। आरोग्य की दृष्टि से भी रात का भोजन शरीर के लिये हानिकारक व दुष्पाच्य होता है।

8- चलित रसः- समय व्यतीत होने के साथ वस्तुओं के रंग, रस, गंध, स्पर्श बिगड़ जाने से उस वस्तु का रस चलित हो जाता है। उस समय दो इन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होती है। जैसे- बासी अन्न, साग-सब्जी, चावल, दाल आदि रात्रि व्यतीत होने के पश्चात बासी हो जाते है। सूर्यास्त हो जाने के पन्द्रह दिन एवं चार्तुमास में सात दिन बाद चलित रस होजाते हैं। आर्द्रा नक्षत्र लगने के बाद आम, चार्तुमास में मेवा, पत्ती का साग आदि अभक्ष्य है। दो रात निकलने के बाद बासी दही में भी जीवोत्पत्ति हो जाती है। ''चलित रस'' एक प्रकार की ''एक्सपायर डेट'' वस्तु है जो कालातीत होने पर खाने योग्य नहीं रहती। शास्त्रीय भाषा में उसे चलित रस समझना चाहिये।

9- अनन्तकायः- (कंद-मूल आदि) वनस्पति दो प्रकार की होती है। एक प्रत्येक तथा दूसरी साधारण। प्रत्येक वनस्पति में एक शरीर में एक जीव होता है, जैसे फल आदि। साधारण वनस्पति के एक शरीर में अनन्त जीव रहते हैं। उनका शरीर भी अत्यन्त सूक्ष्म होता है। उदाहरण रुप में आलू, मूली, जमीकन्द, साधारण वनस्पति है। इसके एक सूई की नौंक टिके इतने पाइंट पर टच करें उतने स्थान में असंख्य सूक्ष्म शरीर होते हैं और एक-एक शरीर में अनन्त जीव रहते हैं। कल्पना करो कि कन्द के एक शरीर में रहे अनन्त जीवों को यदि चिड़िया जितना बड़ा बनाकर आकाश में उड़ा दिया जाय तो यह सम्पूर्ण आकाश उन जीवों से भर जायेगा तब भी एक शरीर के जीव खाली नहीं होंगे। इससे समझे एक पूरे आलू में कितने जीव होंगे ? अनन्तकाय के 32 प्रकार हैं। मुख्यतः भूमिकंद, आलू, मूली, गाजर, प्याज पालक आदि, हल्दी, अदरक, थूहर, वज्रकंद आदि ये सभी अनन्तकाय हैं। अनन्तकाय को खाने वाला अनन्त जीवों की हिंसा का पाप करता है।

तुच्छ पदार्थः-

10- बर्फः- यह दो प्रकार की होती है- (अ) प्राकृतिक शीत प्रदेशों में ऊंचे पर्वतों पर गिरने वाला हिमपात। शीतकाल में स्नेफॉल होता है तथा गर्मी में पिघलकर पानी बन जाती है। (ब) कृत्रिम- मशीनों से 18^0 C टेम्प्रेचर पर जमाया हुआ पानी बर्फ (आईस व आईसक्यूब) बन जाता है। जैनदर्शन के अनुसार पानी की एक-एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं। कल्पना करो कि एक बूंद के पानी व सूक्ष्म जीवों का सरसों जितना बड़ा बनाकर पूरे एक लाख योजन के जम्बूद्वीप में ठसाठस भर दिया जाय तब भी एक बूंद के जीव समाप्त नहीं होते। पानी में तथा जमी हुई बर्फ में सूक्ष्म बेइन्द्रिय जीव भी असंख्य रहते हैं। अनछाना पानी पीने से वे भी पेट में चले जाते हैं। शरीर विज्ञान की दृष्टि से बर्फ खाने से शरीर की जठराग्नि मंद पड़ती है। यह जठराग्नि की हमारे शरीर में ऊर्जा (एनर्जी) उत्पन्न करती है। मनुष्य के शरीर का सामान्य टेम्प्रेचर 98^0 फेरानहीट रहना चाहिये। बर्फ खाने या बर्फ के पदार्थ आईसक्रीम, फ्रीज का पानी, आइस केन्डी तथा बहुत अधिक ठंडे पदार्थ खाने से पेट की भूख खत्म हो जाती है। जठाग्नि मंद पड़ने से अनेक बीमारियां होती है। इस प्रकार धार्मिक तथा शारीरिक दोनों दृष्टियों से बर्फ खाना अत्यन्त हानिकारक है।

11- कराः- आकाश से गिरनेवाले ओले को ''करा'' कहा जाता है। ये भी बर्फ की भांति त्याज्य है।

12- विषः- ''जहर'' जिन्दगी को समाप्त करनेवाला है। अनेक प्रकार का जहर आज मिलता है, जैसे- (क) प्राणिज-सांप, बिच्छू, पागल कुत्ता, छिपकली आदि का जहर। (ख) वनस्पतिक-अफीम, धतूरा आदि का। (ग) रासायनिक-पोटेशियम साईनाइट आर्सेनिक बेगोन, डी.डी.टी. (घ) सोमल, हड़ताल आदि। ये सभी प्रकार के जहर प्राणघातक होते हैं। अंग्रेजी ऐन्टीवायोटिक्स दवाई का निर्माण भी जहर से होता है।

13- मिट्टीः- चौक, स्लेट, खड़ी, कच्चा नमक आदि सभी मिट्टी वर्ग में है। यह भी अभक्ष्य है। क्योंकि इनमें असंख्य जीव होते हैं तथा बहुत सी हानिकारक चीजें भी मिली रहती हैं।

14- बहुबीजा फलः- जिन फलों में बीज अधिक मात्रा में रहते हैं। जैसे अंजीर, खसखस दाना, राजगरा आदि। यह भी अभक्ष्य है।

15-बैंगनः- यह कन्दमूल तो नहीं है परन्तु इसमें भी बीज बहुत होते हैं तथा इसकी टोपी में सूक्ष्म त्रस जीव रहते हैं। वात, पित्त, कफ वर्धक तथा आलस्य बढ़ाने वाला है। इसके खाने से मन में तामसिकता व चंचलता बढ़ती है। अतः हिंसा व आरोग्य दोनों ही दृष्टियों से यह त्याज्य है।

16- तुच्छफलः- जिनमें खाने का अल्प तथा फेंकने योग्य तत्व अधिक होता है, जैसे- बेर, जामुन, सीताफल आदि।

17- अनजाना फलः- जिन फलों का नाम भी नहीं मालूम हो, जिनको खाने से लाभ या हानि का भी पता न हो यदि वे जहरीले होंगे तो आत्मघाती भी हो सकता है, इसलिये वे अभक्ष्य हैं।

18-22- पांच प्रकार के उदम्बर फलः- 1- बड़ का फल, 2- उमर (उदम्बर, गलूर) का फल 3- काला उमरा कचुंम्बर का फल, 4- पारस पीपला या पीपल का फल, 5- प्लक्ष (पीपला) का फल। इनमें जितने बीज होते हैं उतने ही वनस्पति जीव होते है। इन बीजों से पेट भी नहीं भरता थोड़े से स्वाद के लिये इतने जीवों का भक्षण करना उचित नहीं है। इस प्रकार ये 22 अभक्ष्य प्रत्येक गृहस्थ के लिये त्याज्य हैं।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

लड़के मर गए फिर भी अरति नहीं:-

महासती सुलसा जैसी परम श्राविका के कोई संतान नहीं था। पतिदेव नागसारथि ने अनेक प्रयत्नों के बाद देवी साधना से सफलता पाई और देवी फल पत्नी सुलसा को खाने के लिए दिये। योगानुचार्य भवितव्यतावश सुलसा ने 32 बालकों को जन्म दिया। 32 लड़के बड़े हुए। वे सब मगध के सम्राट श्रेणिक के अंगरक्षक वीर योद्धा बने। चेड़ा राजा के साथ युद्ध में 32 ही पुत्र सभी मारे गये। यह संदेश सुलसा को मिला। सोचिए क्या हुआ होगा ? हम अलग कल्पना करते हैं। परन्तु सुलसा श्राविका को अश मात्र भी शोक नहीं हुआ। सन्तान नहीं थी तब भी कोई अफसोस दुःख चिन्ता नहीं थी और 32 सन्तान हो गई तो भी कोई हर्ष आनन्द नहीं था। रति-अरति का भाव रखा ही नहीं था। होता है, संसार है। अच्छा-बुरा सब कुछ होता है। कर्म की विचित्रता का संसार है। संसार में नहीं होगा तो कहां होगा ? इस दृष्टिसे मन को समझा लिया। अतः अनुकुलता में रति रखनी और प्रतिकुलता में अरति रखनी यह दोनों ही अवस्था दुःखदायी है।

रति-अरति को एक साथ पाप क्यों गिना ?:-

शायद आपके मन में यह प्रश्न खड़ा होगा कि रति-अरति को पाप क्यों कहा है ? ये तो संसार में जीवों के मन में खड़ेहोते समयानुसार, निमित्त या प्रसंगवश, या परिस्थिति वश मानसिक, वैचारिक भाव, है। इसमें पाप क्या किया ? पाप क्या लगा ? अनुकुल परिस्थिति में, संयोग में आनन्द होना यह तो स्वाभाविक भाव है ? और उसी तरह प्रतिकुल परिस्थिति में, संयोग में अरति का अप्रिय-अप्रीति का दुःख होना यह स्वभाविक भाव है। फिर इसमें पाप कर्म का प्रश्न कहां आता है ? आपका प्रश्न सही है। बात सही है। अब आप थोड़े गौर से सोचिए। यहां पर क्या विषय है ? आत्मा मुलभूत चेतन तत्व है। अनन्तज्ञान-दर्शन-चारित्र आदि गुणवान चेतन तत्व है। अपना मूलभूत पूर्णशुद्ध स्वरुप कर्म के आवरण से ढका हुआ है। आच्छन्न है। ऐसी कर्मकल से अशुद्ध आत्मा को कर्मबंधन से मुक्त करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनानी है। उसके मूल निवासस्थान सिद्धिधाम-मोक्ष में अधिष्ठित करनी है। अतः संसार के कर्म के बंधन से मुक्त करनी है। अब यह तो आप भी मानेंगे ही कि कर्मबंध का कारण पाप प्रवृत्ति है। आत्मा कर्म क्षय के लिये अपने हित में जो भी कुछ करें वह धर्म है, लाभदायी है। लेकिन कर्मबंधन कारक जो भी प्रवृत्ति करें वह अहितकारक, नुकशानकारक है। अनन्त सुख का स्वामी सच्चिदानंद आनन्दधान स्वरुप पद को पानेवाला चेतन स्वयं है। अब उसे बाहरी पदार्थों में सुख मानने की आवश्यकता कहां रही ? और बाहरी जड़ पदार्थों के संचय-संग्रह में आत्मा को सुख मानने की, उसे प्राप्त की प्रवृत्ति करने की आवश्यकता ही क्या थी ? वह अपना स्वरुप, स्वरुप भूलकर या छोड़कर किसी परपदार्थ, बाह्य वस्तु या व्यक्ति में रागी क्यों बन रही है ? क्या यह प्रवृत्ति आत्मा के हित में है ? नहीं, कदापि नहीं। और इससे कर्म का बंध होता है। यह पाप प्रवृत्ति है। ऐसी पाप प्रवृत्तियां 18 प्रकार की प्राणातिपात आदि की बताई गई है। इसमें 15 वें क्रम पर रति-अरति को भी पापस्थान बताया गया है! बाह्य पर पदार्थ वस्तु या व्यक्ति विशेष में किसी भी अनुकूल की प्राप्ति, रति-प्रीति रखनी या प्रतिकूल पदार्थ में अरति-अप्रीति रखनी क्या आत्मा के हित में है ? क्या यह प्रवृत्ति आत्मा को मोक्ष मार्ग की तरफ अग्रसर करेगी ? क्या यह प्रवृत्ति आत्मा को स्वगुणोपासना या कर्मक्षय में सहायक बनेगी ? नहीं। संभव ही नहीं है। थोड़ा आध्यात्मिक दृष्टि से विचार कीजिए तो वास्तविकता जरुर समझ में आएगी। आप सांसारिक व्यवहारिक दृष्टिकोण से सोचते हैं अतः रति अरति पापरुप नहीं दिखाई हैं। लेकिन यह यथार्थ सत्य स्वरुप नहीं है। मान लो कितनी भी रीति-प्रीति-राग से सैकड़ों पदार्थ इकट्ठे भी किये काफी संग्रह भी किया। कई लोगों के प्रति प्रेम प्रीति रखा लेकिन अन्त में क्या हुआ ? मृत्यु के समय जब शरीर को छोड़कर सगे संबंधी, स्नेही-स्वजन एवं सैकड़ों पदार्थों को छोड़कर सगे संबंधी, स्नेही-स्वजन एवं सैकड़ों पदार्थों को छोड़कर जब जाना पड़ता है तब इनमें से क्या साथ आता है ? क्या सब छोड़कर जाते समय आत्मा को दुःख नहीं होगा ? हजारों को मरते समय बहुत दुःखी होते हुए देखा है, आंखों में गंगा-जमुना बहाते हुए रोते हुए देखा है। सोचिए उस समय कैसी दशा होती है ? मेरा ही खड़ा किया हुआ सारा संसार मेरी आंखों के सामने खड़ा है, सबको छोड़कर सब कुछ छोड़कर मुझे सबके बीच में से जाना पड़ रहा है, उस समय अनिच्छा होते हुए भी जबकि कोई

विकल्प ही नहीं है और यमराज के आगे जब कुछ भी नहीं चलता है, मृत्यु के ऊपर तो सबसे ज्यादा अप्रीति-अरति-महादुःख है लेकिन क्या उपाय है ? और एक क्षण में देखते-देखते जाना पड़ता है और चले गये। **''जातस्व ध्रुवो मृत्यु''** संसार में जितने भी जन्मे है उन सबकी यह दशा-मृत्यु अवश्य ही है, और यह निश्चित ही है कि मृत्यु के समय एक अंश मात्र, रक्तिभर भी सोना, चांदी, दागीना आभुषण आदि कुछ भी साथ नहीं ले जाना है और न सगा संबंधी स्नेही साथ आनेवाला है। संभव ही नहीं है। यह मृत्यु का स्वरुप निश्चित ही है तो फिर संसार में जीते समय सैकड़ों लाखों पदार्थों के प्रति रति-अरति रखकर पापकर्म उपार्जन करने के सिवाय और क्या किया है ?

सुख-दुःख की वृत्ति भी पाप कराती है:-

क्या मन में पड़ी हुई सुख प्राप्ति की लालसा कोई पाप नहीं कराती है ? और उसी तरह मन में पड़ी हुई दुःख निवृत्ति की लालसा भी क्या पाप कर्म नहीं कराती ? ओहो ! ध्यान से देखे तो इसके जितना पाप कराने वाली दूसरी कौन सी वृत्ति है ? अठारह ही पाप स्थानों के सेवन के पीछे सुख प्राप्ति की इच्छा प्रबल कारण है। किसी भी रीत से मुझे सुख कैसे मिले ? यह बहुत ही भारी कारण है ! वैसे ही किसी भी रुप से मेरा दुःख कैसे टले ? यह प्रबल कारण है। दुःख एक दिन भी आकर रहे यह पसंद नहीं है। क्योंकि दुःख अप्रिय है और सुख हमेशा रहे इसलिये मनुष्य दिन-रात भागा-भागा सुख के पीछे-पीछे दौड़ रहा है ! कोई यहां कोई वहां ! कोई देश में-कोई विदेश में। व्यापारार्थ, तो कोई घूमने-देखने सर्वत्र दौड़रहा है। दुनिया भर की वस्तुओं का संग्रह किया। घार सजाया, बंगला बनाया। सब कुछ किया ! क्योंकि जड़ वस्तुओं में सुख मिलता है यह उसने मान लिया है। यही उसका अज्ञान है। महा अज्ञान है। सुख यह आत्मा का स्वभाव है। जड़का नहीं ! अतः जड़ पौद्गलिक वस्तु में न तो सुख है और न ही दुःख है। सिर्फ अनुकूल वस्तु में जो राग है, आसक्ति है, जो रति है, वह सुख है और मुझे जो प्रतिकूल वस्तु लगी उसमें अप्रीति अरति है, दुःख है। अतः सुख-दुःख न तो वस्तुओं में है और न ही जड़ वस्तुओं के संग्रह में है। नहीं.... नहीं है ऐसा जीव ने अज्ञानवश, मोह वश मान लिया है और इसी कारण जीव दुःखी होता है। पानी में घी ढूंढने से कहा मिलेगा ? पानी में मंथन करो तो मक्खन कहां से निकलेगा ? वैसे ही जड़पदार्थों में सुख को ढूंढने पर भी कहां से मिलेगा। उपर से जो आज सुखदायी है वह कल दुःखदायी बन जाता है। गरम ऊनी स्वेटर जो सर्दी में सुखदायी वही गरमी की मौसम में दुःखदायी बन जाता है। अतः पदार्थों में आरोपित भाव करके जीव ने अपनी मान्यता बनाई है कि वस्तु में सुख-दुःख है। नहीं कुछ नहीं ! उपाध्यायजी महाराज स्पष्ट कहते हैं कि-

रति-अरति छे वस्तुथी जो, ते उपजे मनमांहि।
अंगज वल्लभ सुत होवेजी, युकादिक नहीं कांही ॥

रति-अरति अर्थात् सुख-दुःख जड़ वस्तुओं में से ही उत्पन्न होते है यह मानना यथार्थ सत्य नहीं है। रति-अरति की उत्पत्ति तो मानसिक कल्पना मात्र से होती है। सोचिए संस्कृत का ''अंगज'' शब्द है। अंगात जायते इति अंगज, जो अपने अंग से उत्पन्न हो वह अंगज है। अर्थात् कौन अंगज है ? पुत्र और जूं आदि। पुत्र भी अपने ही अंग से उत्पन्न होता है और जूं भी अपने ही अंगों में उत्पन्न होती है। एक वीर्य से उत्पन्न है तो दूसरा पसीने से उत्पन्न है। फिर भी पुत्र के प्रति रति है, अत्यन्त स्नेह है और सिर पर जो जूं है उस पर अरति-अप्रीति है। द्वेष है। यदि रति-अरति न हो तो दोनों के प्रति कोई विशेषता नहीं रहती।

रति-अरति की परिवर्तनशीलताः-

इन दोनों में परिवर्तन शीलता बहुत जल्दी होती है। आज रति है, कल अरति हो जाएगी। क्षण-क्षण में बदलने वाली प्रक्रिया है। चूंकि मनोगत वृत्ति है अतः मन जैसे क्षण-क्षण की चंचलता होती है वैसे ही मनोगत वृत्तियों में भी क्षण-क्षण में परिवर्तन होता रहता है। जैसे राग-द्वेष में परिवर्तन होता है वैसे रति-अरति में परिवर्तित होती है। चाय गरम-गरम है तो पसंद है, अनुकूल-प्रिय है और वही घंटे भर बाद ठंडी हो और पीनी पड़ेतो.... आप नाराज होते हैं, अप्रिय है मुंह में भी नहीं जाती। शायद क्रोध चढ़े तो कप-प्लेट भी फेंक देवें, फोड़ देवें। चाय में शक्कर हो तो रति है और शक्कर न हो तो अरति होगी। चाय गरम चाहिये, पानी ठंडा चाहिये, दूध सामान्य गुनगुना चाहिये। इस तरह ये रति-अरति के भाव क्षण, क्षण में बदलते जाते हैं।

इसी कारण से रति-अरति दोनों को अलग अलग करके स्वतंत्र पाप स्थान नहीं कहे है। रति को पन्द्रहवां पाप स्थान और अरति को 16 वां पाप स्थान अलग से नहीं कहा है परन्तु दोनों को साथ मिलाकर रति-अरति साथ ही कहा है। इसका कारण स्पष्टही है कि रति-अरति जो उत्पन्न होती है वह एक

ही पौद्गलिक वस्तु के संयोग-वियोग से उत्पन्न होती है। वस्तु एक ही है। उसकी संयोग वियोग की अवस्था भिन्न-भिन्न है। अतः तद्जन्य रति-अरति भाव भी भिन्न-भिन्न है। परन्तु मूल उद्गम स्थान तो एक ही वस्तु या व्यक्ति है और दूसरा कारण यह है कि यह अनुकूलता और प्रतिकूलता में उत्पन्न मानसिक कल्पना मात्र है। संयोग का वियोग होता है जिस कारण प्रसंग से मानसिक आनंद उत्पन्न हुआ हो, रति हुई हो, उसी कारण-प्रसंग के हट जाने से,नष्टहो जाने से मानसिक निरानंद (शोक) अप्रीति, दुःख भी होता है और जगत में कोई कारण बिना परिवर्तन के हमेशा के लिए एक सा रहता नहीं है। अतः जहां रति वहां कुछ क्षण के बाद अरति आती है और जहां अरति रहती है वहां कालान्तर से रति आती है। इसीलिए दोनों का निर्णीत संयोग होने के कारण ज्ञानी भगवंतों ने दोनों को पंद्रहवें क्रम पर एक ही पापस्थान में साथ में कहा है। इस पापस्थान को एक साथ कहकर दो भाव साथ में बताये है यह ज्ञानी महापुरुषों की दीर्घदर्शिता है।

संपत्ति में सुख है कि दुःख ? :-

एक निर्धन गरीब भिखारी को 5 लाख रुपये की लॉटरी लगी। वह बड़ा खुश हुआ। आनन्द हुआ। उसने युक्ति पूर्वक व्यापार किया। भाग्य खिल गए। किस्मत ने साथ दिया.... और 2-4 साल में 5 लाख रुपये और कमा लिए। अब 10 लाख रुपये हो गये। वह कितना खुश था ? उसके आनंद की कोई सीमा नहीं थी लेकिन संध्या के रंग की तरह बदलते भाग्य ने फिर पलटा खाया और 5 लाख रुपये का नुकसान हो गया। इस परिस्थिति में वह सिर पटककर रोने लगा। बड़ा दुःखी हुआ। व्याकुल होने लगा। उसकी चिन्ता का पार नहीं था। उसका मित्र जो उसकी स्थिति जानता था उसने आकर समझाया अरे भाई ! तुम इतने दुःखी क्यों हो ? क्या बात है ? उसने कहा मेरे 5 लाख चले गए। बड़ी भारी चिन्ता थी। दुःख को सहन करना उसकी शक्ति के बाहर की बात हो गई थी। मित्र ने समझाते हुए कहा- अरे भाई ! तुम दुःखी इसलिए हो रहे हो क्योंकि तुम्हारे 5 लाख रुपये चले गये हैं यह सोच रहे हो परन्तु थोड़ा विचार करो। तुम्हारे पास दूसरे पांच लाख रुपये तो बचे ही है न ? 10 थे उनमें से 5 गये है ठीक है होता है आते है, और जाते हैं। यह तो लक्ष्मी है और इसी को चंचल कहते ही है। तुम ऐसा सोचो कि पांच गए, भले गये मेरे पास और 5 है तो सही फिर क्या प्रश्न है ? और देखो जब एक दिन तुम भिखारी थे, जब तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था उसकी अपेक्षा तो आज काफी ज्यादा 5 लाख तो है। बस मित्र ने उसके थर्मामीटर का पारा 1030 से गिरा दिया और 980 पर ला दिया। अब ठीक हो गया। हमारा यह स्वभाव हो गया है कि हमारे पास क्या नहीं है ? कितना नहीं है ? यही देखते रहते हैं। अतः दुःखी ज्यादा होते है। हम यदि हमारी दृष्टि बदल दें और कितना नहीं है कि अपेक्षा कितनी है यह देखना शुरु कर दो तो आप सुखी बन जाएंगे। सुखी बनने का यह आसान तरीका है। मेरे पास यह नहीं है, इसकी अपेक्षा मेरे पास इतना है यह विचार आपको सुखी बनाएगा। चिन्ता से मुक्त करेगा। दुःख को भी सुखरुप बनाकर जीना इसी में महानता है। रति-अरति के पाप से कर्मबंध-

रति और अरति की प्रवृत्ति एक तो यह है ही मोहनीय कर्म के उदय की प्रकृति है और फिर इस प्रवृत्ति से पुनः पाप यह भयंकर विषचक्र चल रहा है। आज वस्तु और व्यक्ति में हम जो रति-अरति रखते है उससे फिर मोहनीय कर्म का प्रबल बंध होता है। फिर इसके उदय से आगामी जन्मों में फिर इसी पाप के संस्कारवश रति-अरति की प्रवृत्ति होगी। जीव करेगा। फिर उसी कर्म का बंध और फिर वही पाप.... इस तरह से तो अनन्त जन्म चलते ही रहेंगे। कहां कब अन्त होगा ? और यही कारण है कि अनन्त जन्म बीत गए है। अठारह पाप में स्थानों कई पाप स्थान रुप भी है और कई बार पाप स्वयं कर्म प्रकृति रुप भी है। जैसे-क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेषादि कर्म प्रकृति रुप है। मोहनीय कर्म की प्रकृति है। उसी तरह यह रति-अरति भी पापस्थान होते हुए मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों में हास्यादि पटक नोकषाय चारित्र मोहनीय में कर्म प्रकृति रुप है ! इसीलिए इस कर्म के उदय से यही प्रवृत्ति और पुनः इसी पाप प्रवृत्ति से पुनः कर्म प्रकृति का बंध। अंडे-मुर्गी या बीज-वृक्ष की तरह यह क्रम चलता है ! कब इस कर्मचक्र में से छुटकारा होगा ? आखिर कहीं तो करना ही होगा। उसका उपाय यहां पर ही है। आज ही रीति-अरति की पाप प्रवृत्ति बंद कर दें तो जरुर आगे यह कर्म ही नहीं बंधेगा और कर्म बंध से बच गए तो फिर आगे भी बचते ही जायेंगे, अतः कर्म से बचना चाहते हो तो प्रथम पाप से बचना अनिवार्य है। अतः अठारह ही पाप से बचना चाहिये। ये सभी पाप हेय-त्याज्य है। वर्ज्य है। अनाचरणीय है ! **(आगे और भी है...!)**

गुरूदेव का जाना और उत्तरदायित्व का बोध

पू. मुनिराज श्री झवेरसागरजी महाराज के वरद हस्ते दीक्षा ग्रहण करने के बाद पूज्यश्री के सुशिष्य बन हेमचंद्र, मुनिश्री आनंदसागरजी बन गये। मुनिश्री आनंदसागरजी की धार्मिक प्रगति तेज गति से आगे बढ़ रही थी, धार्मिक व्रतोत्सव आदि में तपस्या करते उनके मुख की उज्जवलता अत्यंत शांत और नाम के अरूरूप आनंद से भरी दिखाई देती थी। अपने सुशिष्य की धार्मिक और शासन की अद्‌भूत सेवा देखकर मुनिश्री झवेरसागरजी को भी अप्रितम शांति और आनंद का अनुभव होता था। मुनिश्री आनंद सागरजी म.सा. का प्रथम चातुर्मास अपने गुरूदेव श्री झवेरसागरजी म.सा. के ही साथ लीबड़ी में हुआ था। यहां पर मुनिश्री झवेरसागरजी म.सा. का स्वास्थ्य अचानक ही बिगड़ गया। नवदीक्षित शिष्य मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. जिन्हें अपने गुरू के प्रति अत्यधिक अनुराग था, को चिंता में डाल दिया कुछ दिनों में गुरूदेव का कामधर्म हो गया? अत्यन्त अफसोस और इस आधात ने मुनिश्री आनंदसागरजी को तोड़कर रख दिया। अपने गुरू के सबसे प्रिय शिष्य के लिये यह आघात जबर्जस्त था क्योंकि दीक्षा के एक ही वर्ष में गुरू अपने शिष्य को निराधार छोड़कर चले गये, वे एक ही रट लगाने लगे, आपके चले जाने पर अब मेरा क्या होगा? इस भारी शोक और दुःख में मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा.को श्री संघ के आगवानों ने रात दिन सांत्वना और समझाईश दी और जगत की यही रीत है ऐसा समझाया। थोड़े समय में ही मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. ने अपने को संभाल लिया और गुरू आज्ञा को ध्यान में लाकर वे शास्त्रों के अभ्यास में अपने को मगन कर लिया। पूज्य मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा. इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि संसार का राग दुषण है और सुदेव, सुगुरू, सुधर्म का राग भूषण है। गुरूदेव श्री झवेरसागरजी महाराज साहब के स्वर्गवास होने पर लगे गहरे आघात से संभल कर मुनिश्री को यह समझाने में देर नहीं लगी कि मेरा क्या कर्त्तव्य है गुरूदेव के जाने के बाद अब मेरा क्या फर्ज है? गुरूदेव के वियोग के शोक में ही डूबे रहने से पूज्य के कार्यों की पूर्णाहुति नहीं होगी। गुरूदेव ने मुझे दीक्षा इसीलिये दी थी कि मैं अपने जीवन को पवित्र और सुन्दर बनाऊँ, जैन साहित्य का परिशीलन का उनका उदार करने का परोपकारी लक्ष्य ही मेरा जीवन होगा। आगे के जीवन में आगमोद्धारकश्री ने अपने जीवन लक्ष्य को पाकर जैन जगत में अमर स्थान पा लिया।

गुरूदेव की सीख

जब हेमचन्द्र दीक्षा लेने के लिये मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज के पास गये तो महाराज श्री झवेरसागरजी ने बहुत ही अच्छी तरह से हेमचन्द्र की चारित्र ग्रहण करने, दीक्षा लेने की अनेक तरीकों से बहुत अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त कर ली। हेमचंद्र से भी अच्छी तरह से बातचीत कर उनकी दीक्षा लेने की भावना को समझ लिया। पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज ने हेमचन्द्र को यह बहुत अच्छी तरह से समझा दिया कि दीक्षा क्या है? दीक्षा को पालन कितना कठिन और जवाबदारी भरा काम है। यह बात भी कह दी कि आपसे दीक्षा का पालन नहीं होता है तो इसके कारण सिर्फ आपकी निंदा नहीं होती है बल्कि समग्र जैन शासन की निंदा होती है। यह सब विस्तार से चर्चा होने के बाद धर्मवीर हेमचंद्र ने पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज से कहा- गुरूदेव। दीक्षा क्या है? और इसकी जवाबदारी कितनी गंभीर और महान है। यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं। मैंने अपने अंतर में अनेक वर्षों से दीक्षा लेने की भावना को पुष्ट किया है अब आपश्री मेरी इस भावना को पूर्ण करें। यह मेरी आशा है। दीक्षा लेकर में त्याग धर्म को शोभायमान करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा और मेरी संयम सरिता में लेश मात्र भी गंदगी नहीं होगी।

मैं अंजना

✽ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

शाम को प्रतिक्रमण के बाद एक बहन ने एक साध्वीजी के पास फरियाद की- महाराज ! मैं बहुत दुःखी हूं। सास की टक-टक पूरे दिन चालू ही है। पति की ओर से भी प्रेम नहीं मिलता है। किसी भी बात पर मुझे ही टोकते हैं। कभी कभार आत्महत्या के विचार भी आ जाते हैं लेकिन पुत्र का प्रेम मुझे ऐसा करने से रोकता है। महाराज ! सचमुच ही जिंदगी से ऊब गयी हूं। क्या करुं ? कोई मार्गदर्शन देंगे ?

साध्वीजी ने कहा- बहन ! तेरा दुःख सुनकर मेरा हृदय द्रवित हो उठा, लेकिन मैं दूसरा तो क्या करुं ? तुझे अच्छे विचार देकर मैं सन्मार्ग में ला सकती हूं। तेरी जैसी आत्माओं की बात सुनकर सचमुच ज्ञानीयों के वचन याद आ जाते हैं। उन्होंने कहा है कि- संसार का स्वभाव ही दुःखमय है। संसार कभी दुःखरहित नहीं होता। क्योंकि खारापन नमक का स्वभाव है। वैसे संसार का स्वभाव दुःखमयता है। स्वभाव को हम कभी वस्तु से दूर कर नहीं सकते। हां.... हम हमारा अभिगम अवश्य बदल सकते हैं। दुःख में भी सुख की दृष्टि का अभ्यास कर सकते हैं।

सच कहूं तो दुःख हमें सुनिर्मित करता है, हमें शुद्ध करता है, प्रभु की याद दिलाता है और दूसरे जीवों के प्रति भी हमदर्दी सिखाता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि ऐसा कुछ सिखाने के लिये ही दुःख का आगमन होता है। मिठाई के साथ नमकीन जरुरी, रसपुरी के साथ करेले का शाक जरुरी तो सुख के साथ दुःख जरुरी नहीं ? इसके बिना सुख का आस्वाद भी क्या ?

अकेले सुख से तो मनुष्य बहक जाता है, दूसरे जीवों को ठीक, प्रभु को भी भूल जाता है। इसलिये दुःख भी आवश्यक है। नहीं तो भगवान को याद करे ही कौन ?

सुख मथे शिला पड़ो, प्रभु हृदय से जाय,
बलिहारी है दुःख की, पल पल नाम जपाय।

इसीलिए ही किसी संत ने ऐसा गाया होगा न ?

दुःख को भी उपकारी गिनकर चल। तो ही शायद तुझे नयी जीवनदृष्टि मिलेगी। जीने का आनंद आयेगा। आत्महत्या के विचार चले जायेंगे।

उस बहन ने कहा- महाराज ! ये सभी दार्शनिक बातें सुनते या कहते अच्छी लगती है परन्तु जीवन में जब सचमुच ही दुःख आ पड़ता है तब सभी समझ का बाष्पीभवन हो जाता है। बाकी परोपदेश पंडित तो कौन नहीं है ? मेरे पास कोई आये तो मैं भी उसे ऐसी सयानी बातें समझा दूं। जिस पर बीतती है उसे ही पता चलता है। **''घायल की गत घायल जाने।''** बाकी दूसरे तो सिर्फ शब्दों के स्वस्तिक से खुश कर देते है इतना ही। शब्दों के कढ़ी भात से कभी किसी का पेट भरा है ?

साध्वीजी ने कहा- बहन ! मैं सिर्फ शाब्दिक बात नहीं करती हूं। मुझ पर जो बिता है, उसके आधार पर कहती हूं, अनुभव की बात कहती हूं। तुझे तो क्या दुःख है ? तुझ से तो कई गुना अधिक दुःख मैंने सहन किया है। तू शायद मेरा दुःख सुनेगी तो तेरा रोम-रोम कांप उठेगा। मेरे जीवन में इतना दुःख आया है कि मेरे स्थान पर अगर कोई नाहिम्मत होता तो कब की आत्महत्या कर डालता। यह मैं अभिमान से नहीं बोलती हूं, जो है वही कह रही हूं। दुःख हमारे कर्मो के उदय से ही आते है, दुःख जीवन को बनाते है, प्रभु याद आते हैं- ऐसी समझ से ही दुःखों की झाड़ी के बीच भी मैं टिकी रही।

सुननेवाली बहन स्तब्ध हो गई। कहा- महाराज ! आप मुझे आपकी आपबीती कहेंगे ?

क्यों नहीं ? जरुर कहूंगी। तेरे पास समय हो तो बैठ.... तुझे भी इसमें अवश्य कुछ प्रेरणा मिलेगी। साध्वीजी ने अपनी आपबीती कहने का प्रारंभ किया।

बचपन से ही मेरे ऐसे मनोरथ थे कि शादी करनी तो किसी ऐसे उत्तम पात्र के साथ करनी कि जिससे जीवन धन्य धन्य बन जाये। बाकी जैसे-तैसे पात्र के साथ शादी करके जीवन को नरकमय बनाने से तो अच्छा है कि कुंआरे ही रहना ! मेरे इन मनोरथों को पूर्ण करने मेरे माता-पिता से मुंहतोड़ प्रयत्न किये। अनेक राजकुमारों के चित्र मेरे पास आने लगे।

तो क्या आप राजकुमारी थी ? आपका नाम तथा आपके माता-पिता का नाम तो आपने बताया ही नहीं। बहन ने पूछा।

हां.... मैं राजकुमारी थी। मेरा नाम अंजना ! वैताढ्य पर्वत के राजा अंजनकेतु और रानी अंजनवती मेरे माता-पिता।

अनेक राजकुमारों के चित्र मेरे पास आये, लेकिन मेरी नजर कहीं भी ठरती नहीं थी। चित्र देखते ही मेरी कान्त दृष्टि रुप के सिवाय उनके गुण, सत्व, शील इत्यादि भी देख लेती

थी। मैं मात्र रुप की प्यासी नहीं थी। मैं तो चाहती थी किसी सत्वशील और गुणसम्पन्न राजकुमार को।

आखिर दो राजकुमारों के चित्र पर मेरी नजर ठहरी। मैंने दोनों चित्र मेरे पास रख लिये। भविष्यदत्त और पवनंजय नाम के उन दोनों राजकुमारों में से पवनंजय पर पसंदगी उतरी। मंत्रीओं के कहने अनुसार भविष्यदत्त उत्तम पात्र था, लेकिन ज्ञानीओं के कथन अनुसार वह अल्पायुषी था। अतः पवनंजयकुमार को मैंने भावि पति के रुप में पसंद किये।

शुभ मुहूर्त में हमारी शादी हुई.... बस.... शादी होते ही मुझ पर दुःखों की झाड़ी बरस पड़ी। मैं तो अपनी आँखों में अनेक सपने सजाकर पति के साथ जीवन-मार्ग पर निकल पड़ी थी। परन्तु शादी होते ही मेरे सारे सपने चूरचूर हो गये। स्वप्नों के आकाश में उड़ती मैं सीधी धरती पर गिर पड़ी।

शादी की प्रथम रात्रि में ही मेरे पति मेरे पास आये तो नहीं, मुझे बुलाई भी नहीं। मैं कारण ढूंढने लगी, किन्तु कितने ही मंथन के बावजूद भी मुझे कोई कारण नहीं मिला। पूरे दिन मैं उदास-गमगीन रहने लगी। मेरे सभी मनोरथ के मिनारें टूटकर गिर पड़े। मेरा दुःख मैं न कह सकती थी न सह सकती थी। कहूं तो किसे कहूं ? सुने कौन ? ऐसे ही बारह साल पूरे हो गये।

एक बार मुझे समाचार मिले कि मेरे पतिदेव युद्ध के लिये जा रहे हैं। वरुण के साथ युद्ध कर रहे रावण की मदद करने के लिये जा रहे हैं। युद्ध में तो क्या भरोसा ? युद्ध में गया हुआ वापस घर सही सलामत फिरे तो फिरे ! मैं प्रयाण करते हुए पतिदेव के चरणों में झुक पड़ी, लेकिन मुझे धक्का मारकर, बिना मेरे सामने देखे पतिदेव तो निकल गये। मेरा हृदय चूरचूर हो रहा था। घड़ीभर मुझे हो गया मैं अभी मर जाऊंगी। लेकिन मैं नहीं मरी। मैं क्यों नहीं मरती हूं ? मेरा हृदय अभी तक क्यों धबक रहा है ? इसका मुझे भी आश्चर्य लग रहा था।

माता-पिता, परिवारजन, सखीयें प्यारी जन्मभूमि आदि को छोड़कर स्त्री एक मात्र पति के प्रेम के कारण ससुराल में आती है। वहां आने के बाद भी पति प्रेम नहीं मिले तो उसकी हालत क्या होगी ? यह तो अनुभव करता है- वही जानता है।

परन्तु मेरे आश्चर्य के बीच उसी रात मेरे पतिदेव मेरे पास आ पहुंचे और मुझे प्रेम से बुलाई। मेरे रोम-रोम में आनंद का अभिषेक हो रहा था, जैसे मैं अमृतकुंड में नहाने लगी।

मैंने पूछा : इतने वर्षों तक मेरे सामने भी नहीं देखा और आज अचानक स्नेह कहां से उमड़ गया ?

मेरे पतिदेव ने निखालिसता से कहा- तुझ पर मेरा गुस्सा शादी के पहले से ही था। यद्यपि हमारी सगाई हुई तब तो मुझे तुझ पर अत्यंत ही प्रेम था। तेरे गुण, तेरा रुप देखने मैं आवास में आया था। उस समय तू अपनी सखीयों के साथ बातें कर रही थी। उन बातों में मैंने जो मेरे विषय में तेरे शब्द सुने उससे मैं रोम-रोम में जल उठा। तेरी सखी बोल रही थी : तेरी पसंदगी के दो चित्रों में से वैसे तो भविष्यदत्त उत्तम पात्र था, परन्तु अल्प-वय में ही मोक्ष में जानेवाला होने से मंत्री-राजा वगैरह ने इस पवनंजय को पसंद किया। इसके जवाब में तूने कहा- ''जीवन अल्प हो तो भी कोई हरज नहीं, लेकिन वह उत्तम होना चाहिए। थोड़ा भी अमृत कितना प्रभावशाली होता है ? लंबा जीवन भी खराब जीवन हो तो किस काम का ? हजारों मण जहर का भी कोई अर्थ हैं सही ?'' तेरे इन शब्दों ने मेरे हृदय में आग लगा दी। उस समय मेरा गुस्सा आसमान पर पहुंच गया था। उस समय यदि मेरे मित्र ऋषभदत्त ने मुझे रोका न होता तो मैं तुम्हें वहां का वहीं खत्म कर डालता।

उसके बाद तो तेरे साथ शादी करने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं थी, लेकिन माता-पिता के आग्रह से मुझे शादी करनी पड़ी। तेरे शब्द मेरे हृदय में इतनी गहराई तक पहुंच गये थे कि उसके बाद मुझे कभी तुझ पर प्रेम जगा ही नहीं। आज कभी मुझे समझ में आया है कि मैंने तेरे शब्दों को गलत रुप से पकड़ लिये थे। तू तो सहजता से बोल रही थी और मैंने उन शब्दों को बहुत बड़ा रुप दे दिया।

''परन्तु आज यकायक प्रेम कैसे उमड़ पड़ा ?'' मैंने पूछा। बात ऐसी थी कि आज हमारे युद्ध का पड़ाव सरोवर के पास था। वहां का वातावरण एकदम मनोहर था। मंद मंद ठंडा पवन ! सरोवर में लाल कमल ! इधर-उधर तैरते हंस ! किनारे पर खेलते चक्रवाक पक्षियों ! यह सभी देखते रहें इतना अच्छा भव्य था। शाम को अंधेरा होते ही चक्रवाकीयां भयंकर रुप से रुदन करने लगी। पंख फड़फड़ाती, उन्माद करती, निराशा से कमल के तार को खींचती, चक्रवाकीयों को देखकर मैंने मित्र को पूछा- ये पक्षिनीयां ऐसे क्यों कर रही है ? मित्र ने कहा- दोस्त ! पति का विराह होने से वे आकुल-व्याकुल हो रही हैं। अंधेरे में पति नहीं दिखने से वे चिल्ला-चिल्लाकर रो रही हैं। पूरी रात तड़प-तड़प कर रोती रहेगी, रोती ही रहेगी। रो-रोकर मृतप्रायः बन जायेगी। प्रातःकाल के उजाले में पति को देखते ही मानो नया जीवन पाकर आनंद से झुम उठेगी।

यह सुनते ही मेरे मन में विचारों की बिजली चमक उठी- अरेरे.... एक मात्र रात के वियोग में भी ये चक्रवाकीयां इतना कल्पांत कर रही है.... तो मेरी अंजना का कल्पांत कैसा होगा ? बारह.... बारह वर्ष हो गये मैंने उसके सामने भी नहीं देखा। अरेरे.... मैं कैसा कठोर ? कैसा अहंकारी ? मैंने बारह वर्षो में बराबर देखा है कि उसने कभी परपुरुष के सामने भी नहीं देखा। कभी मेरे प्रति धिक्कार भाव भी पनपा नहीं। फिर भी इन गुणों की मैंने कभी कदर नहीं की। धिक्कार हो मुझे ! नहीं.... अब मुझे उसे और अधिक नहीं तड़फानी चाहिये। नहीं तो शायद वह मर जायेगी। आज रात को ही जाऊंगा और विश्वस्त करुंगा। यह विचार होते ही मैं मित्र ऋषभदत्त के साथ आकाश मार्ग से तेरे पास आ पहुंचा हूं। प्रिये ! मेरा अपराध माफ करना !

मैंने कहा- प्रियतम ! अपराध आपका नहीं, मेरा ही है। मेरे ही कर्मो के उदय से आपको मेरे प्रति अरुचि उत्पन्न हुई। तो आपको माफी देनेवाली मैं कौन ? मैं तो आपकी दासी हूं, सेवक हूं। आप मेरे स्वामी हो। आपको माफी मांगने की होती हैं ?

बहन ! उस रात मुझे प्रथम बार पति का सुख मिला। लेकिन तू ऐसा मत मानना कि मेरे जीवन में दुःख की रात गई और सुख का सवेरा हुआ। सचमुच दुःख तो अभी शुरु हुए।

सुबह जल्दी जब पति विदा होने लगे तब मैंने कहा- प्रियतम् ! मैं ऋतुस्राता हूं। कल अगर मैं माँ बनूं तो जगत मुझे कलंक नहीं देगा न ? मुझे दुनिया को क्या जवाब देना ? युद्ध से आप कब पधारेंगे ? उसका क्या भरोसा ?

पतिदेव ने मुझे अपनी अंगूठी निकालकर देते हुए कहा- मेरे आगमन की यह निशानी तू बता देना। फिर कलंक का कोई प्रश्न ही नहीं रहेगा।

पतिदेव तो चले गये और इस तरफ मैं सचमुच ही गर्भवती बनी। मेरी उदर-वृद्धि देखकर मेरी सास गरज उठी- हरामखोर ! यह क्या धंधा लगा रखा है ? पेट में किसका बालक है ?

मैंने सच बात कहीं, अंगूठी भी बताई, लेकिन मेरी सास नहीं मानी। वह तो और अधिक आरोप लगाने लगी- निर्लज्ज ! ऐसे कु कार्य करते शर्म नहीं आती ? अभी तक मै ऐसा मानती थी कि मेरे पुत्र की गलती है, परन्तु मुझे आज पता चला कि भूल किसकी है ? तू ऐसी कुलटा है तो पवनंजय क्यों तेरे सामने भी देखेगा ? ऐसे काले काम करने के बाद सतीत्व का दिखावा करना ? वाह भाई वाह ! पवनंजय यहां था तब भी तेरे पास नहीं आता था तो युद्ध में से तुझे मिलने आयेगा ? झूठी ! झूठ बोलने की भी कुछ हद होती है ! तेरी बात मैं तो क्या कोई सच नहीं मानेगा। फिर तू अंगूठी बता रही है ! शर्म नहीं आती ? अंगूठी तो पहले से भी हथिया करके रख सकते हैं। इतनी बात क्या हम भी नहीं समझते होंगे ? मेरे सामने क्या देखा करती है ? जा.... निकल जा.... मेरे घर में से। मुझे अब तेरा मुंह भी मत दिखाना। कालमुखी !

सास का एक-एक शब्द मेरे हृदय में चुभते थे। अब तक तो मात्र पति की ओर से उपेक्षा का ही दुःख था, परन्तु मेरे सतीत्व पर किसी ने कलंक नहीं दिया था। अब कलंक आया। उपेक्षा से भी कलंक का दुःख मुझे भयंकर लगा। लेकिन क्या करुं ? अंगूठी ही मेरा अंतिम जवाब था किन्तु कोई मेरी बात सच मानने को तैयार नहीं था।

मैं अपनी प्रिय सखी वसंततिलका के साथ ससुराल से निकलकर पियर गई। लेकिन कलंकिता को पियर में भी कहां से स्थान मिलेगा ? मैं बड़ी आशा लेकर मेरे माता-पिता के पास गई। मैंने सोचा- मेरे माता-पिता को मैं सच बात समझाकर सुखपूर्वक रहूंगी। लेकिन अपना सोचा थोड़ी ही होता है ? मेरे माँ-बाप के पास मेरी कलंकिता के समाचार पहुंच चुके थे। मुझे देखते ही वे बोल उठे- अंजना ! यहां पर पैर मत रखना। तूने सचमुच अपना नाम सार्थक किया है, अंजन जैसे काले काम करके ! फट....रे.... दुष्ट.... तुझसे तो मेरे पेट में पत्थर पैदा हुआ होता तो भी अच्छा रहता ! कम से कम हमारा कुल तो कलंकित नहीं होता। पत्थर तो कपड़ेधोने के लिये भी काम आता है, वस्त्रों का मैल उतारता है, मेले कपड़ेको साफ करता है, जब कि पुत्री होकर तूने निर्मल कुल को मलिन किया है। सात-सात पेढ़ी की हमारी आबरु तूने पानी में डाल दी। तू पुत्री नहीं, किन्तु ठिकरी है। सचमुच आज ठीकरी ने हमारा कीर्तिकुंभ फोड़ दिया। कीर्ति का पूरा अमृत गिर गया। तू ऐसा मत समझना कि पुत्री होने के नाते हम तुझे घर में रखेंगे। घर में तो क्या रखेंगे.... तेरा मुंह देखने भी हम तैयार नहीं है...जा.... अभी की अभी यहां से चली जा। तुझे जहां जाना हो वहां चली जाना। अब यहां आना मत।

(आगे और भी है...!)

❊ मनुष्य अच्छा कर्म एक बार करता है पर ''मैंने किया'' यह घोषणा बार-बार करता है।

गीतार्थ गिरि के शिखर श्रृंगार....

✱ ऋषभ जैन, बड़नगर

जिनागम सेवी पवित्रता के महासागर, जिनशासन के सर्वाधिक संयमपर्याची महात्मा, शतायुवर्षीय गच्छाधिराज....

प.पू.आ.भ.श्री दौलतसागरसूरिजी महाराजा !

भक्त की नजर में भगवान श्रेष्ठ होते है, बेटे की नजर में माँ श्रेष्ठ होती है, बेटी की नजर में गुरु श्रेष्ठ होते है.... परन्तु हमारी सबकी नजर में सुविशाल गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा.... भगवान भी है, माँ भी है, पिता भी है, सद्गुरु भी है.... या यूं कहे कि हम मालवा वासियों के तो सर्वस्व हम शासनभक्तों के तो है सर्वस्व....पूज्यश्री है...!

जैसे कि हिंदू धर्म में होता है, लोग त्रिवेणी में स्नान करने जाते है, जो संगमस्थान होता है.... वहां ! जैसे प्रयागराज...! तीन नदी (गंगा, जमुना, सरस्वती) का मिश्रण-संगम जहां हो जाता है.... वो स्थान, तीर्थस्थान बन जाता है, लोग वहां पवित्र होने के लिए.... वहां स्नान हो जाता है, बस, ठीक वैसे ही.... आज एक ऐसे व्यक्तित्व का परिचय जानना है.... जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र का महासागर है !! सरोवर या झरना, नदी या तालाब ही नहीं.... पूरा महासागर वे है, ऐसे सद्गुणों के स्वामी का, उनके नाम के अक्षरों से अक्षरशः जीवन को जानने-समझने परिचय करने का प्रयास हम करने जा रहे हैं।

दौ- दौनों हाथों से आर्शीवाद देते बरसाते है।
ल- लक्ष्य, लक्षण, लकीर से लखपति है।
त- तरुण, तंदुरस्त तन के धनी है।
सा- सागर समुदाय के साम्राज्यपति है।
ग- गर्व, नाज कर रहा, आज पूरा शासन हमारा।
र- रत्न और रक्षक है.... जिनशासन के।
जी- जीर्णोद्धारक है.... मंदिर, तीर्थ, आगम और जीवन संग्राम के !!

चलिए.... इस नाम में ही छुपे पूज्यश्री के जीवन के गुढ़ रहस्यों को जानने का एक सुन्दर प्रयास हम करते है !!

दोनों हाथों से आर्शीवाद देते-बरसाते हैः- पूज्य आचार्यश्री के कभी भी किसी भी समय पर, कोई भी दर्शन करें.... तो वे सदैव दोनों हाथों को ऊंचा कर, अपरंपार आर्शीवाद बरसाते है, यदि आता है सन् 2017-2018 का पूज्यश्री का मालवा पर्दापण.... मेरे जीवन में पूज्यश्री का प्रथम दर्शन.... भोपावर हुआ था.... तत्पश्चात बड़नगर उज्जैन, इंदौर जहां भी चाहे प्रवेश हो, प्रवचन पाट पर विराजित हो आदि कहीं भी पूज्य प्रवर के दर्शन करो.... वे अनराधार-अमाप अमी आर्शीवाद सभी भक्तों पर समान लौटाते थे। आज भी कोई भी व्यक्ति उनके पास चले जाए, वे ऐसे ही आर्शीवाद देते है, पूज्यश्री के दोनों हाथों से दिए गए आर्शीवाद की ताकत.... गमन को विराट, डाकु को दयालु, शैतान को संत, दुराचारी को सदाचारी और इंसान को भगवान बनाने का सामर्थ्य रखती है, शास्त्रों में लिखा है-

''आयरियनमोक्कारों जीवं मोएइ भवसहस्सातो।
भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहिलाभाए ॥''

अर्थात् आचार्य भगवंत को किया गया नमस्कार, जीव को हजारों भवों से छुड़वाता है यदि आचार्य भगवंत को नमस्कार भाव से किया जाता है तो वह नमस्कार बोधिलाभ का कारण बन जाता है।

लक्ष्य लक्षण लकीर के लखपति हैः-

पूज्य आचार्यश्री ने अपने जीवन में विशेष लक्ष्य बनाया था- ''आगमों की सेवा'', आगमो का संरक्षण, संवर्धन, संपादन आदि पूज्यश्री में जो जीवंत लक्षण है, वो इसी श्लोक से समझ सकते है-सूरि भगवंत लक्षण सम्पन्न शरीर संपदा के स्वामी होते है !

वंदन प्रसादसदनं, सुदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरण येषां केषां न ते वन्धाः ॥

अर्थात् 1- प्रसन्नता से छलकता चेहरा- 2- वात्सल्ययुक्त हृदय 3- अमृतझरती वाणी 4- परोपकार से युक्त जीवन। यह 4 गुण लक्षण पूज्यश्री में बिल्कुल फिट बैठते है, ऐसे गुणधारक लक्षी पुरुष ही सर्व के लिए वंदनीय बन जाते है और आज हम देख रहे है पूज्यश्री के जीवन की स्वयं की लकीर आज किस हाईट तक पहुंच गई है.... पटेल कुल में जन्म-नवकार मंत्र-दीक्षा-मुनि-गणि-पंन्यास-आचार्य और आज है गच्छाधिपति...!! अतः पूज्यश्री लक्ष्य, लक्षण और लकीर में लखपति है...!

तरुण, तन्दुरस्त तन के धनी हैः-

पूज्यश्री की आज वर्तमान में वय 100+ है पर उनकी पुण्याई और प्रभु आर्शीवाद उन पर ऐसा कमाल का कि आज

भी वे इतनी उम्र के लगते नहीं है उनका तन.... तरुण (युवा) तो लगता है, साथ में तंदुरस्त भी है न आंखों पर चश्मा न पीछे कोई टेका, 119 कल्याणक भूमि की पद स्पर्शना आदि अनेक बातों से लगता है कि आप स्वस्थता, तंदुरस्तता, ज्ञान-ध्यान मग्नता आदि में सर्वोपरि है, पूर्व भवों में श्रेष्ठ पाली हुई जीवदया और जयणा के फलस्वरुप ही आज आपमें इतना तेज, स्वस्थता आदि का दर्शन होता है, तंदुरस्त तन के ही प्रभाव से आज भी पूज्यश्री दर्शनाचार, ज्ञानाचार, तपाचार और वीर्यचार.... यह पंचाचार का पालन एकदम उद्यमशील होकर करते हैं।

सागर समुदाय के साम्राज्यपति हैः-

पूज्य श्री तपागच्छ के पू.आ.श्री आनंदसागरसूरीजी म.सा. की पाट परंपरा को दिपाने वाली गच्छाधिपति है जो वर्तमान में 925 से अधिक साधु-साध्वीयों का सुन्दर योगक्षेम कर रहे है, साधु-साध्वीयों के साम्राज्य के साम्राज्यपति.... वरन् सागर समुदाय तक ही नहीं, अपितु प्रवर समिति में भी उच्च पद पर विराजमान है, सागर समुदाय के तमाम महात्मा, गुजरात, म.प्र., राजस्थान, महाराष्ट्र, साऊथ, उत्तर भारत तक जैन धर्म ध्वज लहराने में पूज्यश्री की अनुज्ञा, आर्शीवाद से ही सफल हुए है, अतः आपश्री मात्र सागर ही नहीं अपितु जैनशासन की आन-बान-शान है। चाहे शासनसेवा हो या जिनागम सेवा.... चाहे समुदाय सेवा हो या संयम बुद्धि साधना.... हर तत्व में पूज्यश्री 100 प्रतिशत समर्पित है। शासन के, समुदाय गच्छ के महत्वपूर्ण निर्णय आदि में आपश्री का विशेष महत्व-योगदान रहता है- जिस तरह सागर की पहचान गंभीरता से होती है उसी प्रकार आपश्री की पहचान भी गांधीर्यगुण से होती है।

गर्व, नाज कर रहा आज पूरा शासन हमाराः-

''छत्तीस गुणो गुरु मइझ''+तिथ्यरो समो सूरी''आदि अनेक विशेषणों में आपश्री की छवि ऐसी फीट है.... कि पूरा जैनशासन आज गौरवान्वित महसूस कर रहा है, विशेष क्या कहूंः- ''जिनशासन की शान हो, साहेब.... मालवा वासियों की जान हो साहेब...!'' सागर समुदाय से --- ही तो वहीं जैनशासन का विश्वास हो'' ऐसे गुरुदेव को हमारा लाख-लाख नमस्कार है...! शास्त्र की गाथा है-

जह दीवो दीवसयं पइप्पा दिप्पई य।
सो दीवसमा आयरिया अप्पं च परं च दीवंति ॥

जैसे एक दीपक सैकड़ों दीपकों को दिप्त प्रज्जवलित करता है और स्वयं भी दीप्त रहता है, वैसे ही आचार्य भगवंत दूसरों को भी दीप्त प्रज्जवलित बनाते है और स्वयं भी दीप्त बने रहते है अर्थात् जिसके पास ज्ञान का प्रकाश है, चारित्र का तेल है और दर्शन की बाती है, ऐसे दीप ही पूरे विश्व को प्रगटाते है, हमारा शासन ऐसे देदिप्यमान पुरुष को नमन करता है।

रत्न और रक्षक है.... जिन शासन केः-

पूज्यश्रीहमारे शासन के कोहिनूर रत्न है, रत्न के साथ-साथ रक्षक भी है, पूज्यश्री तीनों कैटेगरी के महापुरुष है- 1- आराधक 2-प्रभावक 3- रक्षक मंदिर, तीर्थ, आगम, शासन कार्य विपत्ति आदि में रत्न बनकर, रक्षा करते है, अनेक साधु-साध्वीयों+श्रावक-श्राविकाओं के पास इस बात के दृष्टांत मिल जाते है, प्रभु वीर के शासन को 2547 वर्षो से चलाने में अनेक आचार्यो का यशस्वी योगदान रहा है.... जिनशासन इन्हीं की मेहनत संघर्ष, बदौलत आज हमारे हाथ में है अतः ऐसे आचार्य भगवंत तीर्थकर के उत्तराधिकारी है साथ में प्रत्येक जीवों के लिए उद्धारकारी है...! प्रत्येक आचार्य भगवंत संघ में रत्नत्रायी की आराधना करवाते है और इस त्रायी (रतन) की रक्षा भी करते है, पूज्यश्री रत्न इस तरह बन पाए- धर्म में लोगों को जोड़ा+धन को सन्मार्ग में वपराया.... इस तरह पूज्यश्री का जीवन रत्नमयी बन पाया, ऐसे आचार्यश्री के लिए कुछ पंक्तियांः-

जिनके नयनों में स्नेह और ममता का अंजन है,
जीवन में प्रेम और परोपकार का गुंजन है,
रोम-रोम में संयम की साधना का स्पंदन है,
वात्सल्य के महासागर, गुरुदेव को मेरा....
शत्-शत् वंदन है...!!

ऐसे जिनशासन के रक्षक,रत्न को भावपूर्ण वंदन-नमन!

जीर्णोद्धारक है.... मंदिर-तीर्थ, आगम और जीवन संग्राम केः-

पूज्यश्री मंदिर तथा तीर्थ के साथ-साथ.... जीवन और आगम के भी जीर्णोद्धारक है। आपश्री ने मालवा के घसोई, परासली तीर्थ+आगम मंदिर कात्रज (पूना) के साथ साथ अनेकों जगह पर जीर्णोद्धार कराया है साथ में आगमों की विशेष सेवा और कई जीवों के कल्याण में आपश्री निमित्त बने है.... अतः आपश्री इन तत्वों के जीर्णोद्धारक, उद्धारक है...!! आपको पता ही होगी, एक और बात=जिस मंदिर को 100

साल पूर्ण हो जाते है, उसे तीर्थ मान लिया जाता है.... तो पूज्यश्री को जीवन में 100 साल पूर्ण हो चुके है, तो ऐसे अमृतपुरुष तो जंगम तीर्थ (चलते-फिरते तीर्थ दर्शन) ही है !! सही कहा गया हैः-

भाई-बहिन का प्यार....

✻ डॉ. दिलीप धींग,

रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।
किस्मत वालों को मिलता, यह अनुपम उपहार है ॥
पूछो उसको जिस भाई के बहिन नहीं है।
पूछो उसको जिस बहिन के भाई नहीं है।
भैया दूज,राखी सूनी,सूने सब त्यौहार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा,भाई-बहिन का प्यार है ।।1।।

वीरप्रभु जब मोक्ष पधारे,व्यथित हुए थे नन्दीवर्धन।
तब सुदर्शना बहिना आई, किया शोक रंज का वर्जन।
आओ भैया मेरे घर पर, बहिना की मनुहार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है ।।2।।

बाहुबलि की दीर्घ साधना, जब फलदायी नहीं बन पाई।
तब दो बहिनें ब्राह्मी-सुन्दरी आई, सम्यक् राह दिखाई।
मान-कषाय बुरा है छोड़ो, विनय धर्म का सार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है ।।3।।

साध्वी सरस्वती का जब कामी राजा ने हरण किया।
भ्राता कालक जैनाचार्य ने रणभेरी को बजा दिया।
मुक्त बहिन,भयमुक्त प्रजा हुई धर्म की जय जयकार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है ।।4।।

आन, बान और शान बढ़ाते,भारत के त्यौहार निराले।
सम्बन्ध को सम बनाते, जीवन मूल्यों के रखवाले।
रीत प्रीत की रहे सुरक्षित, रक्षित घर-परिवार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है ।।5।।

जहां मिले गुरु का शरण,
वही हो जाता है शुद्ध अंतकरण'' !!

पूज्यश्री की प्रेरणा से 9-9 आगम मंदिर+31 बारसा सूत्र भंडार स्थापित हो चुके है, आचार्यश्री कैसे होते है.... तो कहा जाता है कि आठ संपदा के स्वामी आचार्य श्री होते है। 1- आचार संपदा 2- श्रुत संपदा 3- शरीर संपदा 4- मति संपदा 5- संग्रहपरिज्ञ संपदा 6- प्रयोगमति संपदा 7- वचन संपदा 8- वांचना संपदा...! हमारे पूज्य उपकारी आचार्यश्री के पास यह आठों संपदा मौजूद है, गंभीरता की गहराई और गीतार्थता की ऊंचाई हमें आपश्री में नजर आती है, आचरण के आकाश में विचरण करने वाले आपश्री में अनेकों गुण मौजूद है। अंतमुर्खता, सौम्यता, पारदर्शिता, निखालसता आदि उनका जीवन वैभव+गुण वैभव+पुण्यवैभव का वर्णन सीमित शब्दों में किया जाना बेमुश्किल ही था.... उनके बारे में शॉर्ट में वर्णन करना.... मात्र सूर्य को दीपक दिखाने जितना ही हुआ है.... परन्तु पुरा ग्रंथ जब प्रकाशित होगा.... तब आप सभी पूज्यश्री को पूर्णतः परिचय में जान पायेंगे..!

अंत में इतना ही कहना चाहूंगा....
दूध में मलाई हो, जीवन में भलाई हो...,
ठंडी में रजाई हो..., गर्मी में ठंडाई हो...,
भोजन में मिठाई हो.... प्रसंग में शहनाई हो....

और आप सभी को पूज्य गच्छाधिपति आ.श्री दौलतसागरसूरीजी म.सा. को 100 वें जन्मदिवस और 81 वां दीक्षा दिवस की खूब-खूब बधाई हो...!! जिनाज्ञा विरुद्ध लिखने में आया हो तो त्रिविध-त्रिविध मिच्छामि दुक्कड़म्...!!

संत समागमः- *सुना है पारस का स्पर्श होते ही लोहा स्वर्ण बन जाता है। परन्तु हाँ ! वह लोहा पारस तो कदापि नहीं बनता है। परन्तु ये संत महात्मा तो अलौकिक पारस है। उनके समागम से लोहे के समान अपनी आत्मा ही पारस बन जाती है। संत-समागम जीवन के वन7 को उपवन में बदलने में सक्षम है। उनमें दानव को देव और मुर्ख को महान बनाने की ताकत है। कंचन का समागम तो बहुत किया, आवश्यकता है अब संतरुपी पारस के समागम की। संत महात्मा स्वयं कष्टों को सहन कर कुछ उपलब्धि हासिल करते है और जगत के हित के लिए प्रदान करते हैं। संतों में उदारता और विशालता का गुण होने से, उनके समागम में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति पर उनका प्रभाव पड़ता है। संत समागम से अपना भी उद्धार होता है।*

सागर आ रहा है

विक्रम संवत् २००० का वर्ष था।

गुजरात की गौरवमयी सुरत नगरी में पूज्य आ.श्री विज्ञानसूरीजी म.सा.अपने शिष्य परिवार के साथ श्री नेमुभाई की वाड़ी के उपाश्रय में पधारे थे। उन दिनों वहां पूज्य पंन्यास श्री दौलतसागरजी महाराज म.सा.भी विराजमान थे। बातों ही बातों में पूज्य आचार्यश्री विज्ञान सूरीजी म.ने स्वयं पू.सागरजी महाराज के संबंध में एक प्रसंग सुनाया था। वहीं यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

अहमदाबाद शहर में शासन सम्राट पूज्य आचार्यदेव श्री विजय नेमिसूरीश्वरजी म.सा.विराजमान थे। उन दिनों उन्हें समाचार मिले कि आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंद सागर सूरीश्वरजी म.सा. अहमदाबाद पधार रहे हैं।

तब आचार्यश्री नेमिसूरीजी म.सा.ने अपने शिष्यों से कहा-'सागर आ रहा है जितना ज्ञान ले सको ले लेना। वह तो साक्षात् सागर में सागर है। तुम जितना ज्ञान जल उलीचोगे उतना कम है।'

पूज्य सागरजी म.सा.का यथासमय अहमदाबाद में आगमन हुआ। पूज्यश्री उदयसूरीजी नंदनसूरीजी म.आदि सभी सहवर्ति मुनियों ने पूज्य सागरजी म.के सानिध्य में रह लगातार आठ दिन तक अनेकविध प्रश्नों का निराकरण प्राप्त कर अपनी जिज्ञासा की तृष्णा को शांत किया।

विहार के समय पूज्य आगमोद्धारक सूरीजी ने मुनिवृंदों को संबोधित कर कहा- 'आज तक तुमने प्रश्न किये और मैंने उत्तर दिये, किंतु आज मेरी बारी है। प्रश्न मैं करूंगा और उत्तर तुम दोगे। बोलो मंजूर है ना?'

मुनिवरों ने सोत्साह कह दिया- 'गुरूवर...! अवश्य उत्तर देंगे हम...!

तब पूज्य सागरजी महाराज ने प्रश्न किया- 'ऐसी कौन सी वस्तु है, जो हमें दृष्टिगोचर होती है। लेकिन केवली भगवंत उसे नहीं देख सकते?'

प्रश्न सुनकर ही मुनिवृंद गहरे विचार-सागर में डूब गया। भला यह कैसी आश्चर्यजनक बात है। केवलज्ञान में तो तीनों काल के भाव एक स्थान पर बैठकर देखे जा सकते है, तो फिर मनुष्य देखता है और केवलज्ञानी क्यों नहीं सकते? खूब विचार किया। परन्तु किसी की समझ में नहीं आया। प्रश्न बड़ा गहन था और अटपटा भी। अल्पावधि पश्चात पूज्य सागरजी म.ने कहा- कोई बात नहीं, कल सोचकर मुझे उत्तर देना।'

मुनिवृंद दूसरे दिन पुनः उपस्थित हुआ। परन्तु प्रश्न का उत्तर काफि प्रयास के बावजूद भी ढूंढ नहीं पाये थे। सभी ने विनम्र भाव से अपने मन की बात कहीं- 'गुरूदेव..., आप ही बताईये। हमारी समझ में कुछ नहीं आता कि ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसे मनुष्य देखता है परन्तु केवली महाराज नहीं देखते।'

'स्वप्न...!' प्रत्युत्तर में पूज्य सागरजी महाराज ने शांत स्वर में कहा।

सुनकर मुनिवृंद हँस पड़ा। 'ओह...! कितनी आश्चर्यजनक बात है यह...! परन्तु उतनी ही वास्तविक भी। केवल भगवन्त को निद्रा नहीं आती, क्योंकि दर्शनावरणीय कर्म का संपूर्ण नाश होने के उपरान्त ही केवलज्ञान का अविर्भाव होता है और निद्रा दर्शनावरणीय कर्म के अन्तर्गत आती है। अब उन्हें जब नींद ही नहीं आती तो स्वप्न भला कैसे देखेंगे?'

पूज्य सागरजी महाराज के उत्तर से सब आनंदित हो, हँस पड़े। हास्य की लहर पूरे उपाश्रय में लहरा गई। पूज्य सागरजी महाराज के अध्यापन की अपनी अद्भूत शैली थी। ज्ञान के साथ गम्मत भी...!

धन्य भाग्य इस भूमि के....

जहां-जहां सागरजी के पुनित चरण प्रतिरोज पड़े ।
दिव्य भूमि यह सूरतनगरी धर्म पथ पर आगे बड़े ।।
जैन धर्म की यह महाज्योति, धर्मवीर ने प्रगटाई ।
तिमिर दिवाकर सिंहकुंज, धर्म भावना को जगाई।।
निश दिन प्रेम दया केश शब्द इनके श्रीमुख से निकले।
मोह और माया से भरे लोगों यह शब्द आनंद करें।।
दिव्य सुगंध जैन धर्म की, संघ में फैलाते है।
और ह्रदय में वीर धर्म की प्रीति जगाते है।।
यह जैन धर्म सफ ल भूमि का, परम सुखकारी है।
यह सुख कीर्ति यश देनेवाला कृति यह प्यारी है।।
सुभट बन के वीर धर्म के सागरजी विचरते है।
धन्य भाग्य इस पुण्यभूमि के यहां ऐसे संत रहते है।।

शारदानंद सागरजी

वाराणसी नगर...!

विद्याधाम होने के कारण विश्वविख्यात है। वहां पंडितों की कोई कमी नहीं है। सूरि शेखर पूज्य सागरजी म. एक बार अपने शिष्यों के साथ उत्तर भारत की कल्याणक भूमि की स्पर्शना करने पधारे थे। कानपुर लखनऊ होते हुए आप काशी देश की बनारस याने वाराणसी नगरी पधारे। भगवान श्री पार्श्वनाथ प्रभु के कल्याणकों से पवित्र बनी तीर्थभूमि की यात्रा कर मुनिवृंद आनंदित हो उठा। महाराजश्री ने उपाश्रय में स्थिरता की।

दोपहर में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का दिग्गज पंडितवर्ग महाराजश्री के दर्शनार्थ आया। आगमोद्धारक सूरिजी अप्रतिम विद्वान है, ऐसी ख्याति बहुत दिनों से वे लोग सुनते आ रहे थे। अतः पूज्यवर के वाराणसी आगमन से उनके मन में अद्भूत उत्साह संचालित हुआ था। आपकी विद्वत्ता का लाभ भी मिले और जैन मुनि की प्रवचन शैली का भी ख्याल आए इस दृष्टि को मद्देनजर रखकर विद्वानों ने आपसे साग्रह अनुरोध किया– 'गुरूवर...! आपश्री हमारे विद्यालय में पधारकर हमें अनुग्रहित करें। हमें स्याद्वाद पर आपका प्रवचन सुनना है। अतः संस्कृत भाषा में प्रवचन देकर कृतार्थ करें...!

आगमोद्धारक गुरूदेव ने विनंती स्वीकार की और निश्चित समय पर अपने विद्वान शिष्यों के साथ विश्व विद्यालय पहुंचे। विद्वान पंडितों ने मुनिवृंद का भावभरा स्वागत किया। मानो साक्षात् सरस्वती नंदन ही पधारे हो ऐसा पंडितों को अहसास हुआ।

एक ऊँची प्रवचनपीठ पर सूरीसागरजी म. को विराजमान कर प्रवचन आरंभ करने की विनंती की। मंगलाचरण के साथ पूज्य गुरूदेव ने प्रवचन प्रारंभ किया। गंगानदी के अखण्ड जलप्रवाह की तरह वे स्याद्वाद पर प्रदीर्घ समय तक संस्कृत भाषा में धारा–प्रवाहबद्ध बोलते रहे।

मानो साक्षात् सरस्वती का नर अवतार ही सदेह काशी विश्वविद्यालय में आज अवतरित न हुआ हो। उसकी वाणी श्रवणकर पंडितों के मन डोलने लगे जैसे बॉसरी की सुमधुर सुरावलियों को श्रवण कर फणिधर डोलने लगता है। ठीक त्यों ही सूरिजी की सुमधुर देशना की सुरावलियों से पंडित वर्ग मन्त्रमुग्ध होकर डोलने लगा।

व्याख्यान पूर्ण हुआ...!

सभागृह में नीरव शान्ति थी...! विश्वविद्यालय के विद्वान प्रवचन रस में सराबोर हो गये। उन्होंने पूज्यश्री से दो प्रवचन और देने के लिये आग्रह किया। साथ ही कहा– 'महाराजश्री...! आप तो शारदानंदन है। परन्तु हमारी समझ में आएँ ऐसी सुबोध संस्कृत भाषा का प्रयोग करें। आज का प्रवचन जटिल संस्कृत भाषा में था, जिसे समझने में हमें अत्याधिक प्रयत्न करने पड़े है।'

पूज्य गुरूदेव ने पंडितों की बात स्वीकार की। स्याद्वाद पर ही दो प्रवचन और दिये परन्तु भाषा सरल और सुबोध थी। विश्वविद्यालय के विद्वतजन विचार में खो गये। महात्माजी ने किसी भी विद्यालय में अध्ययन मनन नहीं किया है, ना ही संस्कृत भाषा इनके दैनिक प्रयोग की भाषा है। फिर भी हमारे जैसे विद्वानों के लिये समझने में क्लिष्ट ऐसी संस्कृत भाषा सरलता के साथ धारा प्रवाह बोल सकते है। सचमुच विद्वत्ता के सागर है। पंडित प्रवर एक स्वर में बोल पड़े–

'हे महात्मन्...! वास्तव में आप माँ सरस्वती के साक्षात नर अवतार है।' शिष्यों के आश्चर्य और आनंद का भी पारावार न रहा। गुरूदेव इतनी बढ़िया संस्कृत बोल सकते है, इस बात का उन्हें भी आज प्रथम बार ही अहसास हुआ था।

ऐसी अद्भूत और अपूर्व विद्वत्ता के बावजूद भी सूरीजी अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने हेतु भूलकर भी कभी संस्कृत भाषा में नहीं बोलते थे। अपने दैनिक व्यवहार में प्रायः वे ग्राम्य और देशी भाषा का ही प्रयोग करते थे।

एक अद्भुत छःरि पालित संघ

विक्रम संवत 1976 में सूरत के प्रसिद्ध श्रेष्ठ श्री जीवणचंद्र नवलचंद्र जवेरीजी द्वारा पूज्यपाद जीवंत आगम ज्ञानकोष के सागर पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की पवित्र पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताणा का संघ निकाला था। इस संघ के बाद आप पूज्यश्री का मंगल चातुर्मास सिद्धगिरी में ही हुआ। उस समय याने आज से लगभग 85 वर्ष पूर्व इस चातुर्मास में दो लाख रुपये से अधिक का खर्च हुआ था। इस संघ में 700 श्रावक श्राविका और साधु-साध्वीजी थे। सूरत में महावद 8 को संघ ने प्रस्थान किया था, जिसने चैत्य वद 2 के दिन श्री सिद्धाचल की पावन रज को स्पर्श किया था।

सागर का जन्म महोत्सव- सूरत में एक अद्भुत प्रसंग

विक्रम संवत 2004 की आषाढी अमावस्या वृहस्पतिवार दिनांक 5/8/1948 का मंगलमय दिवस सूर्यपुर (सूरत) के आंगन में पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की 74वें जन्म महोत्सव प्रसंग पर हुआ स्वर्ण महोत्सव के रूप में याद किया जाता है। इस मंगलमय प्रसंग पर ताम्रपत्र जैनागम मंदिर में आंगी पूजा भावना श्री अनंतनाथजी मंदिर में आंगी पूजा व्याख्यान में लड्डू की प्रभावना रखी गई थी।

इस अवसर पूज्य आगमोद्धारश्री ने लगभग एक घंटा 10 मिनट व्याख्यान दिया था और फरमाया था कि हीरे की कीमत जानकार ही करता है,बालक नहीं, बच्चा उसे कांच की गोटी ही समझता है। बच्चा उसके वास्तविक स्वरूप को जाने बगैर देखता है जबकि जवेरी हीरे के स्वरूप को देखकर समझता है। व्याख्यान की समाप्ति के बाद पूज्य गुरुदेव के जीवन पर श्राविका बहनों ने एक ऐसी गहुली का गान किया जिसमें उनके सम्पूर्ण जीवन की झलक मिलती थी। गहुली सुन श्रीसंघ आनंदित हो गया। इसके बाद सेठ श्री डाकोरभाई वकील ने गुरुदेव की यशोगान से आनंद ला दिया। उन्होंने कहा कि -व्याख्यान में कहा गया कि सिद्ध वस्तु का विवेचन करने की जरूरत नहीं होती है जैन गगन में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री एक सिद्ध प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अजोड़ आचार्यश्री है। समस्त जैन संघ और सूरत के जैन संघ आपश्री की 74वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर दीर्घायुष्यवान हो ऐसी इच्छा है। इसके बाद सुश्रावक धर्म परायण डाकोरभाई दयाचंदमलजी ने बताया कि- शासन प्रभावक श्री देवार्दिकगणि सश्रमण के बाद आगम की अमूल्य विरासत चतुर्दिक संघ को प्रदान कर और सुस्थिर बनाकर पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश ने वर्तमानकालीन आचार्यों में कीर्तिरूप नदी के प्रवेश बगैर यशसागर भरा गया उसे जैन शासन में अखण्डित रखने का आपश्री ने विशिष्ट कार्य किया है उपसंहार करने के लिये पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज के परम विद्वान सुशिष्य पन्यासप्रवर श्री चंद्रसागरजी गणि जी ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किये एवं अपना सारगर्भित व्याख्यान दे सर्वमंगल का श्रवण कराया ओर संघ विसर्जन हुआ ।

मगनभाई का दीक्षा प्रेम

हेमचंदभाई (पू.सागरजी म.सा.) का वैराग्य के प्रति प्रेम मातुश्री यमुनादेवी को अच्छा नहीं लगता था उनके इस प्रकार के वैराग्य प्रेम से वे असंतुष्ट रहती थी। श्री मगनलाल भाई (पिताश्री)को हेमचंद्रभाई की वैराग्य के प्रति रूचि परिवार में सिर्फ उन्हें ही नहीं थी बल्कि पिताश्री मगनभाई को भी यह रूचि थी श्री मगनभाई हमेशा दीक्षा लेने का विचार रखते थे परन्तु वे चाहते थे कि पहले दोनों पुत्र श्री हेमचंद्रभाई एवं मणिभाई दोनों दीक्षा लेवें। इसके बाद वो भी दीक्षित हो जाये। पिताश्री मगनभाई जानते थे कि मेरा दायित्व फर्ज सिर्फ इतना नहीं है कि मैं पुत्रों का लालन पालन कर उन्हें संसार में ऐसा ही छोड़ दूं, मेरा तो सही फर्ज यह है कि मैं बच्चों का शाश्वत कल्याण करूं। इसलिये मैं चाहता हूं कि मेरे दोनों ही पुत्र ही भगवती दीक्षा करें। मैं मगनभाई यह भी समझते थे कि अगर मैं पहले दीक्षा ले लेता है तो फिर दोनों बच्चों को दीक्षा मार्ग पर आगे ले जाने के लिये कौन मार्गदर्शन-प्रेरणा देगी। ऐसा होने पर वे संसार सागर में ही अटक जायेंगे।

पहचानः- *एक व्यक्ति साधु से प्रश्न करता है कि महाराज संसार में हर प्रकार के लोग रहते हैं इनमें हम अच्छे और बुरे लोगों की पहचान किस प्रकार कर सकते हैं ?*

उत्तर में साधु ने उस व्यक्ति से ही एक प्रश्न पूछ लिया- तुम पहले ये बताओ कि क्या पागल के सिर पर सींग लगे होते हैं ? व्यक्ति ने तुरन्त उत्तर दिया- नहीं। तो फिर तुम ये कैसे जान लेते हो कि यह व्यक्ति पागल है ? उसकी उल्टी-सुल्टी चाल तथा असाधारण कर्म ही उसकी पहचान कराती है।

साधु ने तुरन्त उत्तर दिया- ठीक उसी प्रकार संसार में व्यक्ति की पहचान उसके कर्म तथा उसके मित्रजनों से की जाती है। जिस प्रकार पागल व्यक्ति को तुम कहीं भी और कैसे भी लोगों के बीच में छोड़ दो, परन्तु वह अपने कर्म के कारण स्वतः प्रत्यक्ष हो जाता है उसी प्रकार बुरे व्यक्ति स्वयं अपनी बुराईयों से अपना परिचय देते हैं।

पू. श्रीसागरजी महाराज की जीवन कहानी....

सुनो-सुनो भावी तुम
सागरजी की जीवन कहानी
आगम उद्धारक ये सूरीजी
पावनकारी कहुँ कहानी
पुण्यपुरी ये अहमदाबाद9
पावनकारी पंन्यास ग्रह
पुरुष पुनीत की पावन कहानी
सुनते जीवन पुण्य बने
सुनो.........।
संवत् उन्नीस सौ इक्तीस में
कपडवंज में जन्म हुआ
माता जमना पिता मगनभाई
नाम हेमचंद्र रखा
चौदह वर्ष में विवाह हुआ
पर संसार में मन न लगा
लीकड़ी गांव झवेरसागर
के पास दीक्षा को वरा
सुनो.......।
सास ससुर सगे संबंधी
घर छोड़के चले
वैरागी पूरा 1943 में
वसंत पंचमी को साधु हुये
मास 9 वें सागरजी को छोड़ गुरूजी चले गये
मालवा मेवाड़ में विचारण कर
आगम अभ्यासी बने
सुनो.....।
करा चातुर्मास मुंबई नगर में
अंतरिक्ष जी संघ ले गये
तीर्थ काम के लिये कोर्ट में
यह सत्यवादी विजय हुये।
सूरत लगा साल संवत् 1974 में
आचार्य पद पर स्थिर हुये
संघ निकाला सिद्धगिरी का
आगम वाचना प्रदान की
सुनो........।
नरेश शैलाना की बोघकारी
अमारी का पालन करवाया
सम्मेद शिखर जात्रा करने
बंगाल की ओर पाँव बढ़ाया
कलकत्ता जाकर किया चातुर्मास
आजमगंज में हुई शासन प्रभावना
सादड़ी नगर में संघ मिलाया
सम्प कर शुद्ध करी भावना
सुनो ......।
केशरीयाजी में ध्वजदंड चढ़ाया
फिर अहमदाबाद आया
नवपद आराधना कराई
महेसाणा आकर ब्राउन मिले
करी प्रशंसा आगमधर की
जामनगरी से संघ लाये
आगम मंदिर बनाया
सुनो......।
सूरत शहर में करा सामैया
यह अपूर्व और अद्‌भुत हुआ
ताम्रपत्र आगम मंदिर
यह देख आश्चर्य हुआ
संघ सर पर साल भयंकर
शासन सम्राट चले गये
सागरजी पद्मासन बैठे
संघ को रोता छोड़ी गया
सुनो......।
संवत दो हजार छः के साल में
वैशाख पक्ष श्यामला
धर्मराज की धीरज टूटी
सुरी ऊपर पर त्राट किया
शनिवार पंचमी के दिन
चतुर्थ पहर पर बुझा आ
संघ सकल ने क्षेत्री में धरा
आगमधर को ले लिया
सुनो.....।
शासनदेव को संघ की प्रार्थना
युव प्रभावक कहां गये
जिनके प्रभाव वीर का शासन
जयवंतु सदा रहे
सूरीजी की अमर आत्मज
संघ को आशीर्वाद दिया
नमो-नमो हम सब कहे
कोड़-कोड़ वंदना हमारी लो
सुनो.....।

आगमोद्धारक श्री की जीवन महक

*चंद्रप्रभासागर (चित्रभानु)

पालीताना में आगम मंदिर की अंजन शलाका प्रतिष्ठा भव्य रुप से सम्पन्न कराकर हम पूज्य आचार्यश्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ विहार कर कपड़वंज आये। कपड़वंज में बहुत ही श्रद्धा और भक्ति के साथ में विनम्रता के साथ कभी न भुलाये इस भक्ति के साथ में यहाँ युवाओं ने उत्साह और प्रेम से, आनंद के साथ पूज्यश्री का स्वागत, अगवानी की।

उन दिनों में पूज्य आगमोद्धारक जी की तबीयत नरम रहती थी, वैद्य की ओर से तरल पदार्थों के सेवन की अनुमति दी गई थी दोपहर में बहुत करके सिर्फ चाय ही लेते इसलिये दोपहर में एक गृहस्थ के यहाँ मैं चाय लेने गया घर के लोगों को एक विवाह समारोह में जाने की उत्सुकता थी चाय लेकर जल्दी से आ गया, चाय महाराजश्री को दी। आपने वापस ली। यह पूरी कहानी बनने में पूरा काम होने में 10 मिनिट से अधिक का समय नहीं लगा तभी एक बहन लगभग भागती हुई आई और बहुत बड़ी गलती हो गई, घबराती हुई अपनी भूल के लिये माफी मांगने लगी ओर कहने लगी साहेब-बड़ी भूल हो गई मैं जल्दबाजी में थी मैंने ध्यान नहीं रखा मैंने जानबुझ कर गलती नहीं की है।

बहन की यह व्यग्रता ,घबराना, देखकर में एकदम आश्चर्य से दिग्मूढ़ बन गया मैंने सोचा क्या बात हो गई। मैंने पूछा-बहन। क्या हुआ ? यह घमाल क्यों ? और किस बात की माफी मांग रही हो ? तुम क्या कहना चाहती हो, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। क्या साहेबजी। आपको पता नहीं है क्या ? चाय में शक्कर के स्थान पर मैंने नमक डाल दिया था। इस लिये मैं घबरा कर अधीर बन गई हूँ यह कहकर उसने जैसे विस्फोट कर दिया।

यह सुनकर मेरे आश्चर्य का पार नहीं रहा। यह क्या हो गया मैं विचार में डूब गया ।बहन बोलती ही रही साहेब। मुझे मेरे एक निकट संबंधी की शादी में जाना था। मेरा मन उसमें लगा हुआ था मैं धुन में थी इसी धुन में मैंने शक्कर की डिब्बे के स्थान पर नमक का डिब्बा हाथ में ले लिया और चाय में नमक डाल दिया। यह मेरी भयंकर भूल हो गई है यह गलती मेरे से हो गई जब हमने घर में चाय पी तो हमें पता चला की यह गलती हो गई है।

बहन बोलती ही जा रही थी, उस समय मुझे एक ही विचार आया कि - आचार्य महाराजश्री की इन्द्रिय विजय की गंभीरता का। बहन कहें कि चाय में नमक डल गया है पूज्यश्री ने तो इस बारे में कुछ भी नहीं कहा ? कुछ न हीं कहा यह तो ठीक है, परंतु उनके प्रशांत मुख पर जरा सी भी विकृति नहीं दिखाई दी। चाय पी लेने के बाद भी उनके मुख पर एकदम शांति थी मुख एकदम स्वस्थ्य दिख रहा था ।बहन को सांत्वना देकर मैं आचार्यश्री के पास में गया मैंने अत्यंत विनम्र भाव से विनंती कर कहा- साहेब चाय में शक्कर के बदले नमक डाल दिया गया था, परंतु आपने कुछ भी नहीं बतलाया?

चेहरे पर गुलाबी हास्य मुस्कान लाते हुये आपने कहा-चाय तो कोई कोई दिन खारी होती है ? इससे पेट साफ हो जाता है, इससे नुकसान क्या होगा ? और खारा पूछे तो खारा और मीठा यह (जीभ का स्वाद बताना इसे कहते है) तो जीभ को ही लगता है पेट में तो सब एक जैसा ही है ना। माल खरीदने वाले व्यापारी से अधिक दलाल तूफान करता है पेट माल खरीदने वाला व्यापारी है और जीभ दलाल है। इसलिये वह तूफान ज्यादा करती है। तूफानी करने वाले के पंजे में कसाई नहीं इसको काबू में रखने का नाम ही संयम है।

यह बात को सुनकर मेरे आँखों से आश्रुधारा बहने के साथ भावों के तेज से चमक उठी, मेरी क्षुद्रता और इनकी महत्ता ? मेरी नोट बुक में से।

मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज

आगमोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीसागरानंद सूरीश्वरजी महाराज के पिता श्री मगनभाई ने बहुत गहन और गंभीर विचार किया कि मेरे पुत्र हेमचंद्र की दीक्षा तो ऐसे एकमात्र पुरूषरत्न के पास होनी चाहिये जो हेमचंद्र की आत्मा में रहने वाले अनंत गुणों का विकास कर सकें। श्री मगनभाई की दृष्टि उस समय के सभी साधु भगवंत में ऐसे इन्द्र देवता को नमन करने योग्य पवित्र जैन साधु की खोज में लग गई तब उन्होंने पाया कि ऐसे एक मात्र मुनि पुरंदर श्री झवेरसागरजी महाराज ही है। जैन साधुओं के संघ में स्तम्भ तुल्य हिम्मतवान तत्ववेत्ता क्रिया निष्ठ विद्वत और महाज्ञानी के रूप में श्री झवेरसागरजी महाराज की ख्याति और कीर्ति उस समय समस्त गुजरात में विस्तार से थी और उस समय पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज लीबड़ी में विराजमान थे यहीं श्री मगनभाई, हेमचन्द्र के साथ मिलने पहुंचे थे।

महिमा त्राता सद्गुरु की

* इन्द्रचन्द्र दुधेड़िया, जलगांव

सद्गुरु समता तत्व हैः-

साधना में सम्यक्त्व ग्रहण किया जाता है। यह सम्यक्त्व ग्रहण किया जाता है। वह सम्यक्त्व ग्रहण सूत्र है- **''अरिहंतों मह देवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो। जिण पण्णतं ततं, इअ सम्मतं मए गहियं ॥** अर्थात् अरिहंत मेरे सुदेव है, पंच महाव्रतधारी साधु मेरे सद्गुरु है, जिनेश्वर द्वारा प्रज्ञप्त दयाधर्म मेरा सुधर्म है। इस सम्यक्त्व रुप श्रद्धा को मैंने धारण किया है। इस सूत्र में सद्गुरु की महिमा समाविष्ट है।

सद्गुरु समर्पण स्थल हैः-

मुझे ज्ञात है कि अरिहंत भगवंत मेरे समक्ष नहीं हो सकते। वे दिव्य चेतन है, पर अशरीरी है। तब उनसे संपर्क कैसे हो ? उनकी सन्निधि मुझे कैसे प्राप्त हो ? सद्गुरु प्रत्यक्ष मेरे सामने है। मुझे उनका सान्निध्य प्राप्त हो सकता है। मैं उनसे संवाद कर सकता हूं। वे शरीरी भी है, चेतन भी है और ज्ञानी भी। पर क्या वे मुझे तिरा देंगे ? मेरे भीतर जिज्ञासा उठती है। सुधर्म आगमों में लिखित है। वह ज्ञान है, पर अचेतन है, जड़ है। वह मेरा सहयोगी तो बन सकता है पर क्या उस जिनवाणी के छपे शब्दों में छुपे मर्म का मेरी बुद्धि द्वारा आंकलन हो सकता है ? मेरे मन में संदेह उत्पन्न होता है।

अरिहंत भगवंत का दर्शन नहीं हो सकता। शास्त्रों में समाविष्ट ज्ञान मेरी बोध क्षमता से परे है। ऐसी अवस्था में सद्गुरु की शरण यही एक मार्ग बचता है। वे सुधर्म के ज्ञानी है। मोक्ष मार्ग के रहस्य को मेरे सामने सरल भाषा में खोलने में वे समर्थ है। वे मुझे परम आत्मा का दर्शन कराने का आत्मबल रखते हैं। कहा भी गया है- **''गुरु अजिणा, जिण संकासा।''** सद्गुरु अरिहंत नहीं है, परन्तु उनके समान है। किसी भक्त कवि ने कहा है- **''बलिहारी गुरुदेव की गोविंद दियो बताय।''** उस गुरु को मेरे प्राण समर्पित है, जिन्होंने मुझे भगवान के दर्शन कराये।

सद्गुरु जीवन नैया के खेवैया हैः-

मध्य लोक रुप महानद के एक तट पर संसार में सुधर्म है, दूसरे तट पर मुक्तिधाम है सुदेव का। संसार के भवबंधन से मुझे मुक्त कौन करायेगा ? मेरे अंतर्नाद ने मुझे झकझोरा- ''रे मूढ़, तेरी नाव की रस्सी को खोल। उसे इस महानद में तैरने के लिये छोड़ दे और सद्गुरु के भरोसे उस नाव में बैठ जा। वही तेरी नाव के निपुण नाविक है। उनकी क्षमता पर संदेह न कर। समग्रता से सद्गुरु के चरणों में अपना समर्पण कर दे।'' अंतर्नाद की वाणी मेरी शंका का समाधान कर रही थी। पर एक नया प्रश्न उपस्थित हुआ- सद्गुरु को कहां ढूंढू ?

मालूम हुआ कि सद्गुरु की शोध नहीं की जा सकती। तब फिर मेरे सद्गुरु कौन ? बारबार प्रश्न उठता- यदि सद्गुरु की शोध नहीं की जा सकती तो क्या मेरी मुक्ति यात्रा प्रारंभ ही न होगी ? सत्य यह है कि अगर मेरी मनीषा में बल है तो मुझे सद्गुरु अवश्य मिलेंगे। मेरी भावना जितनी अधिक गहरी होगी उतनी शीघ्रता से मेरी इच्छा पूरी होगी। मेरी शोध तब पूर्ण होगी जब धर्म के प्रति मेरी श्रद्धा प्रगाढ़ होगी। ऐसी कोई घटना घटेगी कि सुषुप्त श्रद्धा जागृत हो जायेगी। आचार्य उमास्वाति ने लिखा है- **अधिगमाद्वा।** कोई सूचना, कोई उपदेश,कोई संदेश या कोई संकेत निमित बनता है, सम्यग्दर्शन घटता है।

कभी भीतर की आवाज झंकृत होती है। श्रद्धा का स्फुल्लिंग चमकता है और तब सद्गुरु का बुलावा आता है। आचार्य उमास्वाति ने लिखा है- **निसर्गाद्वा।** यह नैसर्गिक प्रक्रिया है। पुकार अंतर्तम से निकलती है तो उस सितार के तार सद्गुरु की सितार के तारों से अनुनादित हो जाते है और पांव सद्गुरु की सितार के तारों से अनुनादित हो जाते हैं और पांव सद्गुरु की दिशा में चल पड़ते हैं। उस तट पर सद्गुरु हाथ में पतवार लिये खड़े मिलते है। सद्गुरु की शोध समाप्त होती है। मेरा असत् से साथ छूटता है, सत् से संयोग होता है और मेरी मुक्तिधाम की यात्रा प्रारम्भ होती है।

सद्गुरु तमस में ज्योति हैः-

मेरा अंधकार से प्रकाश तक का प्रवास भी बड़ा रोमांचक है। मैं तो अज्ञान की मूरत हूं। अनादिकाल से पहले गुणस्थान ''मिथ्यात्व'' रुप भवचक्र में घूम रहा था। अचानक ज्ञान के प्रकाश की किरण दिखायी दी, जैसे अंधकूप में रहने वाले कूर्म को दिखायी दी थी। उस किरण से आकर्षित हुआ मैं उसके दर्शन के लिये व्याकुल रहता। जैसे-जैसे व्याकुलता की तीव्रता बढ़ती गयी, उस किरण के दर्शन बढ़ते गये। मैं दूसरे गुणस्थान '' सास्वादन'' में पहुंचा। पर पुरातन गाढे संस्कारों के कारण भौतिकता में उलझ कर मैं फिर से पहले गुणस्थान में चला गया। इस पतन के काल में प्रकाश का

जो आनंद मिला वह मुझे कुरेदता रहा। धर्मश्रद्धा आंशिक रुप से जागृत हुई। इस बार मैं अधिक आत्मबल के सहारे तीसरे गुणस्थान '' मिश्र''पर पहुंचा। परन्तु यहां भी मोह कर्म पछाड़ता रहा। पर संत-सतियों के प्रवचन सुनकर मैंने मानव जन्म का महत्व जाना। मुझे अनुभव हुआ कि आर्यावर्त के सांस्कृतिक क्षेत्र में जन्म पाना मेरा सौभाग्य है। जैन परिवार में जन्म मिलना मेरे शुभ कर्मो का फल है। मुझे मिला उत्तम, स्वस्थ, अविकल और पर्याप्त आयु का शरीर मेरी साधना का परिणाम है। मुझे सत्संग, शास्त्र-श्रवण का अवसर मेरी पूर्व तपस्या का परिणाम है। मुझे लगा कि इस दुर्लभ जन्म में धर्मविमुख कार्य करना इस जन्म को व्यर्थ गंवाना है, हीरे को कांच के दाम बेचना है। मैंने संकल्प किया कि मैं धर्माभिमुख होऊं। तब तीसरे गुणस्थान की अवस्था में अनुभूत आनंद से प्रोत्साहित मैंने और अधिक जोर लगाया। और चौथा गुणस्थान ''अविरत-सम्यग्दृष्टि''पाया। इसी काल में सद्गुरु द्वारा ज्ञान का अबुझ दिया जला कर मुझे अज्ञान के अंधकार से मुक्त किया गया। यह ज्योति अब सदा मेरे साथ रहेगी। महानद का यह पहला तट है। नीतिकारों ने सत्य कहा है- '' **गिरति अज्ञानांधकारं इति गुरुः।**'' तात्पर्य यह है कि अज्ञान के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से जो मिटाये वह गुरु।

सद्गुरु कुम्हार है:-

सद्गुरु की असीम कृपा से मैं चौथे गुणस्थान में पहुंचा। मुझे सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ। गिली मिट्टी सद्गुरु के हाथों लगी। अब वे मिट्टी से घट बनायेंगे। भवचक्र से छुटकारा दिलाने के लिये अपने चक्र पर घुमा कर उसे सही आकार देंगे। एक हाथ से बाहर से चोट करेंगे, साथ ही दूसरे हाथ में सहारा देंगे। घाट को सुगढ़ बनाने की उनकी यह प्रक्रिया निश्चित ही सर्वोत्तम है, क्योंकि वे कुशल कुंभकार हैं। उन्हें यह भी अनुमान है कि यह मिट्टी घाट बनाने के लिये योग्य है, अन्यथा वह इसे अपने चक्र पर रखते ही नहीं। उनका बुलावा मुझे मुग्ध बनाकर यों ही नहीं उन तक खींच लाया।

सुडौल आकार देने के पश्चात सद्गुरु उस घट को चक्र से उतार कर धूप में सुखायेंगे। भ्रम, भ्रांति रुप जल का बाष्पीभवन होने पर घट का आकार ठोस बनेगा। अविरति दशा बनेगा। अविरति दशा से विरति दशा में रुपांतरण प्रारंभ होगा। मुझमें जप, तप और व्रत स्वीकार की भावना उत्पन्न होगी। अपनी क्षमतानुसार मैं अपनी स्वेच्छा से पांचवें गुणस्थान '' देश-विरति'' का प्रत्याख्यान करुंगा। सद्गुरु के साथ मेरे नित सत्संग में शंका-संदेह का निराकरण होगा। विरति की दशा प्रगल्भ बनेगी। विरति के प्रत्याख्यान की प्रबल इच्छा होगी। सद्गुरु छठे गुणस्थान '' प्रमत्त-विरति'' का प्रत्याख्यान करायेंगे, क्योंकि उन्हें पता है कि प्रारंभकाल में कुछ असावधानियां, प्रमाद अटल है। अतः तत्पश्चात सद्गुरु इस सूखे घट को भट्टी में तपायेंगे। भट्टी की आग में प्रमाद का कचरा भस्म हो जायेगा, घाट पक जायेगा। तब सद्गुरु मुझे सातवें गुणस्थान '' अप्रमत्त-विरति'' की दीक्षा देंगे। यही महानद का दूसरा तट है। सद्गुरु का साथ यहां तक ही है। नाव और नाविक को मुझे छोड़ना होगा। यहां से आगे मुझे स्वयं मार्ग अकेले ढूंढना होगा, एकलव्य के समान।

सद्गुरु ज्ञानी है:-

सद्गुरु आगमों के ज्ञाता है। उन्होंने परंपरागत श्रुत से श्रवण में आयी जिनवाणी अपने सद्गुरु से सुनी है।इन सद्गुरुओं की श्रृंखला की पहली कड़ी भगवान श्रीमहावीर है। मुझे अनुभव हुआ है कि मेरे सद्गुरु जिनवाणी का सुगम कथन करने में सिद्धवाणी हैं। अध्यात्म जैसे दुर्बोध शास्त्र को सुबोध बनाने में वे कुशल हैं। अध्यात्म की जटिल गुत्थियों को सुलझाने के लिये रोचक सामग्री का उपयोग करने में वे निपुण हैं।

मेरी जिज्ञासा का उन्हें पूर्वाभास हो जाता है, मानो वे मेरे विचार पढ़ लेते हैं। मेरी जिज्ञासा का उन्हें पूर्वाभास हो जाता है, मानो वे मेरे विचार में पढ़ लेते हैं। मेरी जिज्ञासा का वे वत्सलतापूर्वक समाधान बड़ी प्रवीणता से करते हैं। कभी कोई कठिन विषय मेरी बुद्धि की पकड़ में आने में विलंब होता हो, तो वे समतापूर्वक उस विषय को विभिन्न दृष्टांतों द्वारा समझाते हुए धैर्य रखते हैं। तब उनकी दक्षता उच्च श्रेणी की होती है। मेरी बोधक्षमता का उल्लंघन करते हुए कभी उन्होंने मुझे कोई पाठ पढ़ाया हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं। परन्तु मेरा आत्मविकास अवरुद्ध न हो इस हेतु उन्होंने सदैव मुझे ऊपर के तल पर पहुंचाने में अपनी पटुता का परिचय दिया है। इसी कारण मेरा चतुर्थ गुणस्थान से सप्तम गुणस्थान तक उद्धार हुआ है। उनकी वाणी सुनने में मेरी लगन उसी का परिणाम है। किसी ने मुझे पूछा- ''**श्राव्यं किम् ?** तुम्हारे लिये सर्वोत्तम श्रवणीय क्या है ? सहजता से मेरा उत्तर मिला- ''**सद्गुरु वाक्यम्।**'' मेरे गुरु के वचन। जी चाहता है कि मैं उनकी वाणी सुनता ही रहूं।

सद्‌गुरु क्षमताविकासक है:-

मेरे सद्‌गुरु ने अपनी विद्वता से मेरे अज्ञान को मिटाया है। उन्होंने ही मेरी सुषुप्त आकलन शक्ति को जागृत किया है। इसी जागरण से मेरी ज्ञान पाने की प्यास वृद्धिंगत हुई है। उनके सान्निध्य में मेरे विचारों में सकारात्मक परिवर्तन होने लगता है। उनकी उपस्थिति से पूरा वातावरण गुण-भारित हो जाता है। उनके भामंडल*{helo}* आभामंडल *{aura}* प्रभामंडल*{corona}* और तेजोमंडल *{nimbus}* की रश्मियों से पूरा परिवेश मंगल, पवित्र बन जाता है। उस भारित वातावरण का मेरी विचारशक्ति पर प्रभाव होना नैसर्गिक है। उनके हस्तस्पर्श से मेरा शरीर पुलकित हो जाता है। एक नयी ऊर्जा का मेरे शरीर में संचार होता है, एक नया उत्साह मेरे चित्त में जन्म लेता है। मेरा मनन-चिंतन भौतिकता से हटकर आध्यात्मिकता पर केंद्रित होने लगता है। उनके सत्संग-सान्निध्य में उपासन लगा कर प्रवचन श्रवण में मुझे अवर्णनीय सुख की अनुभूति होती है। उनके वचन सुनने के लिये उत्सुक मेरे सदा अतृप्त कान तृप्ति का अनुभव करते हैं। उनके धर्मकथन के श्रवण से मेरा धर्मस्पर्श होता है और यह स्पर्श प्रतिदिन नया ज्ञान मेरे स्मरण में भरता है। धीरे-धीरे पर निश्चित ही मेरी बोधक्षमता का विकास हुआ है- बिन्दु-बिन्दु से सिन्धु बना है। इसी से मेरी बुद्धि की वृद्धि, शुद्धि हुई है। यह सत्य है कि मेरे सद्‌गुरु ने मेरी क्षमता का मुझसे परिचय कराया है।

सद्‌गुरु अग्निपिंड है:-

मुझे दिया हुआ ज्ञान मेरे द्वारा आत्मसात हुआ है या नहीं इसलिये मेरे सद्‌गुरु ने विभिन्न कसौटियां अपनायी। प्रथम,उन्होंने मुझे विषय वात्सल्यपूर्वक समझाया,मेरी जिज्ञासाओं को तुष्ट किया और पश्चात मुझे कुछ प्रश्न पूछ कर यह निश्चित किया कि मेरा बोध अपेक्षित गहराई तक है। द्वितीय, कुछ कठिन पहेलियां, रहस्यमय कथायें और गूढ़ प्रश्नों के उत्तर उन्होंने मुझसे जानना चाहे। इस प्रकार उन्होंने मेरा कौतुहल उभारा,मेरी जिज्ञासा जगायी और मेरी उत्सुकता बढ़ायी। तृतीय उन्होंने अनुशासन का शस्त्र भी उठाया। मेरे प्रति वत्सलता के कोमल कोश से बाहर निकल कर मेरी ज्ञानपिपासा तथा नियमितता में जागरुकता तथा निरंतरता लाने हेतु उन्होंने निष्ठुरता के कठोर कोश में वास भी किया। चतुर्थ, उन्होंने मुझे जप, तप, व्रत का वास्तविक अर्थ और व्यापक महत्व समझाकर पांचवें गुणस्थान ''देश-विरति'' स्वीकार के लिये प्रेरित किया। पंचम, इसके पश्चात उन्होंने मुझे प्रमाद का स्वरुप और उससे होनेवाली हानियों को स्पष्ट किया। यह मेरे लिये एक विशेष अनुभव था। षष्ठ तत्पश्चात उन्होंने मुझे जैन दर्शन के पंच मूल सिद्धांतों का विस्तार से विवेचन किया। अहिंसा, अमृषा, अस्तेय, अमैथुन और अपरिग्रह इन मूल्यों का विशाल स्वरुप जान कर तथा उनके अनगिनत लाभों को समझ कर मैं जैन दर्शन की श्रेष्ठता से अभिभूत हुआ। इससे मेरी स्वयं प्रेरणा उजागर हुई और मैं मानसिक रुप से छठे गुणस्थान ''विरत-प्रमत्त'' स्वीकार के लिये तैयार हुआ। सप्तम, उन्होंने मुझे रात्रिभोज त्याग का मथितार्थ बताया। उस व्रत की वैज्ञानिकता से यह मेरा परिचय था। मैं अनायास ही सातवें गुणस्थान ''विरत-अप्रमत्त'' की भूमिका में पहुंच गया। मुझे मेरे अंतर तक यह बोध हुआ कि मेरे आध्यात्मिक उद्धार के लिये जो-जो आवश्यक था, वह मेरे सद्‌गुरु ने किया। सुवर्ण को भट्टी में तपाने से सुवर्ण के मूल स्वरुप, शुद्धत्व और तेज का ज्ञान होता है। यह उनकी अंतिम कसौटी थी।

सातवें गुणस्थान पर लाकर उन्होंने मुझे महानद के दूसरे किनारे पर नाव से उतार दिया। स्वयं को योग्य सिद्ध करने के लिये मुझे अकेला छोड़ दिया, जिस प्रकार माता-पिता बच्चे को चलना सिखाने के प्रारंभिक काल में सहारा देते हैं और फिर किसी मोड़ पर उसे अकेला चलने देते हैं। ऐसा ही तो गुरुओं के महागुरु भगवान श्रीमहावीर कहते थे, **''अहासुहं देवाणुप्पिया !''** हे देवानुप्रिय, अब तुम्हें सुख हो वैसा करो, अर्थात् इसके पश्चात उत्तरदायित्व तुम्हारा है। इस आदर्श का मेरे सद्‌गुरु ने भी पालन किया और मुझे स्वावलंबी बनाया।

सद्‌गुरु कल्याणमित्र है:-

मेरे सबसे अधिक हितैषी मेरे सद्‌गुरु है। उन्होंने तब तक मुझे आधार दिया, जब तक मैं महानद का दूसरे तट पर नहीं पहुंचा था। अब यहां से आगे मुझे अपना उत्थान एकलव्य की भांति स्वयं करना होगा। अब मैं ही सद्‌गुरु और मैं ही शिष्य। कोई समस्या उपस्थित हो, तो सद्‌गुरु का स्मरण करुं और समाधान पाऊं। सातवें गुणस्थान पर लाकर उन्होंने अपना स्वयं स्वीकृत उत्तरदायित्व निभाया। आठवें गुणस्थान ''अपूर्वकरण'' से स्वाधीन होकर मुझे सीढ़ियां अपने विकसित आत्मबल से स्वयं चढ़ना है। आठवें पायदान पर पहले कभी नहीं हुए ऐसे जटिल रुपांतरण होंगे जिनमें मुझे धैर्य, साहस की आवश्यकता होगी। इस कठोर कसौटी में मैं निश्चित ही उत्तीर्ण होउंगा। नौवें गुणस्थान ''अनिवृत्तीकरण''

में मुझे सम्यक्त्व, संतुलन का लाभ होगा। दसवें गुणस्थान ''अनिवृत्तीकरण'' में मुझे सम्यक्त्व, संतुलन का लाभ होगा। दसवें गुणस्थान '' सूक्ष्म-संपराय'' में कषाय सूक्ष्म रुप में शेष रहेंगे।

इस गुणस्थान में भी कसौटी होगी। यदि आत्मबल में कमी से गुण कम पाये तो मुझे उपशांत श्रेणी चढ़ना होगा और उसके परिणाम स्वरुप मेरा तेजी से आध्यात्मिक पतन भी होगा। पर मैं फिर भी गुणस्थानों की सीढ़ियां चढ़कर क्षपक श्रेणी प्राप्त कर सकुंगा। यदि प्रथम प्रयास में ही उत्कृष्ट गुण पाये, तो क्षपक श्रेणी चढूंगा और ग्यारहवें गुणस्थान को लांघ कर बारहवें गुणस्थान ''क्षीण-मोह'' पहुंचूंगा। इस गुणस्थान में मोह अत्यंत क्षीण हो जायेगा और मैं अरिहंत भगवंतों की अवस्था में अनुनादित हो सकूंगा। इस अवस्था में ही मेरी स्पंदन आवृत्ति अरिहंतों की स्पंदन आवृत्ति मेल खाती है।

अब मोहनीय कर्म नष्ट होने पर केव अघाती कर्म शेष रहते हैं। इस तेरहवें गुणस्थान ''सयोगी-केवली'' में मात्र यौगिक क्रियायें होती है। इन क्रियाओं से कर्म बंध नहीं होते।इस स्थिति की साधना में मेरा ज्ञान-मस्तिष्क विकसित होता जावेगा, मति, श्रुत, अवधि एवं मनपर्यय ये चारों ज्ञान चरम अवस्था में पहुंचकर एक केवलज्ञान में विलीन हो जायेंगे। चौदहवां गुणस्थान ''अयोगी-केवली'' है, शुद्ध, बुद्ध अवस्था। अघाती कर्म नष्ट होने पर मोक्षधाम प्राप्त होने की स्थिति। मर्त्य से अमर्त्य बनने का अंतिम सोपान। मुझे इतना अनमोल ज्ञानदान देनेवाले सद्‌गुरु के मुझ पर अनंत उपकार है। हे परम श्रद्धेय सद्‌गुरु, आपके चरणों में शीष झुकाकर मेरे बारंबार वंदन, नमन।

गुरुकुलवास

ज्ञान से विनय और बहुमान का महत्व अधिक कहा गया है। क्योंकि गुरु का विनय और बहुमान करनेवालों को ज्ञान सहजरुप से ही मिल जाता है। पन्द्रह सौ तापसो को केवलज्ञान हो गया था, उसका कारण गुरु-बहुमान था। कितनेक तापसों को गुरु गौतम स्वामी पर बहुमान होने पर केवलज्ञान हुआ तो कितनेक तापसों को श्री गौतमस्वामी के मुंह से श्री महावीरदेव का वर्णन सुनते केवलज्ञान हुआ है।

ये प्रसंग दिखाते हैं कि गुरु-बहुमान की कितनी महिमा है? शास्त्रकारों ने गुरुकुल-वास की इतनी महिमा इसलिए ही गाई होगी न?

गुरुकुल-वास किसे कहते हैं? उपदेश पद में पू. हरिभद्र सूरीजी कहते हैं कि गुरु और कुल (परिवार) के साथ औचित्यपूर्वक, दशविध समाचारी के पालनपूर्वक रहना वह गुरुकुलवास है। गुरु की आज्ञा में रहना वही सच्चा गुरुकुलवास है। आज्ञा न हो तो गुरु के साथ रहने पर भी ''गुरुकुलवास'' नहीं कहा जाता है। आज्ञा हो तो गुरु से दूर होने पर भी ''गुरुकुलवास'' कहा जाता है। सच्चा गुरु कुलवास गुरु की आज्ञा में है, गुरु-बहुमान भाव में है।

गुरु के प्रति समर्पण भाव से मासतुष जैसे अल्पज्ञानी भी तैर गये हैं। अंधा आदमी भी नगर में पहुंच सकता है, अगर सीधा मार्ग मिल जाय! गुरु सीधा मार्ग है।

आज्ञा:- *देव-गुरु की भक्ति करना याने उनकी आज्ञा का पालन करना। आज्ञा पालन के बिना उनकी भक्ति कभी भी नहीं हो सकती। भक्ति करना शायद हमें पसंद हो, लेकिन किसी की आज्ञा का पालन करना हमें कठिन लगता है। मैं किसी की आज्ञा मानूं? मैं किसी की आज्ञा मानूं? मैं किसी को मस्तक से नमन करुं? मैं किसी के नियंत्रण में रहूं? नहीं.... यह कभी नहीं होगा। हमारा अहंकार गर्जना करता है।*

हमें स्वाभाविक रुप से ही स्वतंत्र रहना पसंद है। किसी की आज्ञा में रहना अच्छा ही नहीं लगता। इसका भी कारण है। जीव का सहज स्वभाव स्वतंत्र है इसलिए स्वतंत्रता उसे पसंद हो वह स्वाभाविक ही है।

लेकिन जब तक जीव संसार में है, वहां तक कर्म के अधीन है, वहां तक उसको मोहताजा की आज्ञा माननी ही पड़ती है।

मोह की आज्ञा से छुटने के लिये ही भगवान की और गुरु की आज्ञा स्वीकार करनी होगी। देव-गुरु की आज्ञा स्वीकारने से हमें वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। हमारी मानी हुई स्वतंत्रता तो स्वच्छंदता ही है, मोहराजा की गुलामी ही है।

मोह की आज्ञा में क्लेश है, विव्हलता है।

प्रभु की आज्ञा में प्रसन्नता है, स्वस्थता है।

हमें क्या पसंद है?

वर्ग पहेली क्रमांक-315

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4	5		■
6		■	7	8			■	9
■	10	11	■		■	12	13	
14			15			■	16	
	■	17		■	■	18	■	
19	20	■		■	21		22	
23		24	■	25	■	26		■
	■	27			28	■	29	30
31			■	■	32			

बाएं से दाएं:-

1- किसी सेवा या कार्य के बदले दी जानेवाली सम्मान निधि---(4)
4- पांचवें विहरमानजी का नाम- सु---थ स्वामी(3)
6- हवा, समीर, पवन का पर्यायवाची-ब-- (2)
7- पर्युषण पर्व के अंतिम दिन--- पर्व मनाते है (4)
10- कर भला होगा भला, अंत भले का--- होगा (2)
12- भोरोल तीर्थ के निकट, विक्रम की पहली सदी का तीर्थ --- (3)
14-नव गति,---छंद नव, नवल कंठ नव, जलद मंद रव, नव नभ के नव विहग वृंद को, नव पर नव स्वर दे (2,2,2)
16- भ.सुविधिनाथ की मोक्ष कल्याणक तिथि भादवा सुदी न--- (2)
17-आ--ही हरषै,नहीं, नैनन नही सनेह, तुलसी तहां न जाइये, कंचन बरसे मेघ (2)
19-हिंदी माह की तिथि कहलाती है- -- (2)
21-मंगलम भगवान वीरो,---गौतम गणि मंगलम स्थूलि भद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम (4)
23- किसी भी कार्य को विधिवत करने के कुछ--- होते है (3)
26- एक भजन है- --- तड़पत हरि दर्शन को आज, मोरे तुम बिन बिगरे सगरे काज (2)
27- भ.महावीर के 10 प्रमुख श्रावकों में से एक---म (4)
29- भ.वासुपूज्यजी के पांचों कल्याणक यहां हुए-चंपा--(2)
31- आगलोड़तीर्थ में बिराजे है तपागच्छ के अधिष्ठायक देव श्री---द्र वीर (3)
32- भ.सुमतिनाथजी के पिता का नाम राजा---(4)

वर्ग पहेली क्रमांक-314 का परिणाम

■	वा	रा	ण	सी	■	हा	भ	द्र
रा	मा	■	मो	रा	दे	वी	■	प्र
व	■	का	■	■	■	र	प्र	भ
ण	मो	का	र	■	भ	■	ह	■
■	र	■	स	म	य	■	ला	■
■	पं	च	प	■	दे	ल	द	र
शि	खा	र	■	थ	■	क्ष्मी	■	ज
क्षा	■	व	र	का	णा	■	सा	त
क	म्पि	ला	■	न	म	स्का	र	■

ऊपर से नीचे:-

1- कषाय में शामिल है-क्रोध, मान,---और लोभ (2)
2- पहली आरती पूजा कीजे,---पामी लावो लीजे (4)
3- भ.महावीर के--का नाम है-मातंग/ब्रह्मशांति (2)
4- नवकार मंत्र के--से दूर होते है सारे विघ्न (2)
5- हाथी लांछन वाले तीर्थंकर प्रभु का नाम-श्री अजी---भगवान (3)
8- जैन मतावलंबियों को सरकार ने अल्पसंख्यक के रुप में--- प्रदान की है (2)
9- आंध्र के पश्चिमी गोदावरी जिले में स्थित भ. आदिनाथ का तीर्थ--- (5)
11-पंचरंगी जैन ध्वज में---र्ण सिद्ध प्रभु का प्रतीक होता है (2,1)
13- फालना के निकट भगवान शांतिनाथ का प्राचीन तीर्थ सांडे--- (2)
14-सस्कृत वाक्य ''--- गुरुवरम'' का अर्थ होता है-गुरुवर को प्रतिदिन नमन करता हूं (3,3)
15-राष्ट्र संत अमर मुनि की प्रेरणा से आचार्या चंदनाजी द्वारा स्थापित धर्मस्थल-वीरा--- (3)
18-भ.महावीर पर बीस उपसर्ग करने वाला---देव (3)
20-भार---ध्वज तिरंगा में तीन रंग, जबकि जैन ध्वज में पांच रंग होते है (2)
22- लक्ष्मणी और मोहनखेड़ा के मध्य, कुक्षी के निकट भ. आदिनाथ की फिरोजा वर्ण की प्रतिमावाला तीर्थ ता--(4)
24-एक विहरमानजी का नाम---द्र स्वामी (3)
25-भक्ति की है--दादा आज थारे आणो है (2)
28- आज खिले दो फूलों में से ए---रा, एक तेरा, चलो प्रभु को समर्पित करें, हो गया सवेरा (1,1)
30-रानी नंदा के तीर्थंकर पुत्र भ.शीतलनाथ के पिता का नाम राजा द्रढ़ --(4)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-315

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

प्रश्न के उत्तर दीजिये ?

1- प्रसिद्ध जैन ''जल मंदिर'' बिहार राज्य के किस शहर में है ?
2- जैन साहित्य को क्या कहा जाता है ?
3- नवकार मंत्र में बिना शरीरवाले कितने पद है ?
4- दीक्षा दिवस को ही मोक्ष किसने प्राप्त किया ?
5- भ.महावीर से दीक्षित होने के पूर्व प्रतिदिन 6 पुरुष एवं एक स्त्री का वध कौन करता था ?
6- वरदत्त-गुणमंजरी की कथा किस दिन पढ़ी जाती है ?
7- आचार्यश्री हरिभद्रसूरीजी की पहचानवाला एक शब्द ?
8- श्री सिद्धाचक्र के अधिष्ठायक देव कौन है ?
9- युगालिकों के कौन से गुण को देख इन्द्र प्रसन्न हुए ?
10- कौन से कर्मोदय से गोचरी नहीं मिलती ?
11- ''नमुत्थुणं'' सूत्र का विस्तृत वर्णन करनेवाला ग्रंथ कौन सा है ?

** पत्थर से ठोकर लगी तो क्रोध में पत्थर को उठा कर फेंका, गलती पत्थर की या हमारी ? आंख हमारे पास है या उसके पास ? पर हमारी आदत है दूसरे निमित्त पर दोषारोपण करने की।*

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-314 के परिणाम

विजेता:-

1- कृष्णकुमार जारोली, विदिशा (म.प्र.) - प्रथम
2- रेशम बहन कोठारी,नीमच (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

श्रीमती प्रभा जैन, देवास, श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर, स्नेहलता जैन, मंदसौर, सुधा लोढा, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-314 के परिणाम

1- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) -द्वितीय

सही उत्तर-

1- उत्तराध्ययन सूत्र, 2- श्री केसरी मुनि, 3- श्री नमिराजर्षि, 4- रजोहरण, 5-दशवेकालिक सूत्र, 6- अरिहंत परमात्मा, 7- देवकी रानी, 8- पूणिया श्रावक, 9- अर्जुन माली, 10- रावण।

** अन्तरात्मा उसे कहते है जो रहता है बाह्य जगत में, जानता है अन्तर्जगत् को और मानता है परमात्मा को।*

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

श्री नवअपूर्व शिष्य परिवार का चार्तुमास सुनकर धर्मशाला पालीताना में

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नवअपूर्व अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा. मांउड आबु तीर्थ से विहार कर पालीताना आगमन हुआ। प्रवेश 22 जुलाई को हुआ। आपका चार्तुमास सुनकर धर्मशाला में हो रहा है।

पूज्य जैनाचार्य श्रीजगतचंद्रसूरीजी का चातुर्मास अठवा लांईस सूरत में प्रवेश11 जुलाई को हुआ

सूरत- अठंवा लांईस जैन संघ में फूलचन्द्र कल्याणचन्द्र झावेरी पोष धर्मशाला में 11 जुलाई को डेहलावाला आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्रसूरीजी म.सा.,एवं पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य नूतन आचार्य भगवंत श्री कल्पयश विजयजी सूरीजी म.सा.का चार्तुमास प्रवेश हुआ।आचार्य पद ग्रहण करने के ब ाद बनने के बाद आचार्य भगवंत श्री कल्पयश विजयजी सूरीजी म.सा. का प्रथम चार्तुमास सूरत में हो रहा है।

सागर समुदाय की वरिष्ठसाध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी एवं दमिताश्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश हुआ

उज्जैन- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. एवं पू. आचार्यश्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की मंगल निश्रा में श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर वरिष्ठ साध्वीवर्या मनोहरश्रीजी इन्दुश्रीजी म.सा.की परम्परा में सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा के चार्तुमास के लिये उज्जैन श्रीसंघ की विनंती पर आपश्री के चार्तुमास की घोषणा आचार्यश्री की निश्रा में दिनांक 11 जून को आयोजित धर्मसभा में की गई थी।

पूज्य साध्वीवर्या का चातुमार्सिक प्रवेश16 जुलाई को पूज्य आचार्य भगवंत श्री मुक्तिसागरसूरी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में हुआ।प्रांसगिक प्रवचन में यह भी घोषणा हुई कि आचार्यश्री अभ्युदयपुरम् से पेढ़ी पर श्री सागरजी जन्म जयंति महापर्व पर्युषण एवं आसोज नवपद ओली आराधना में निश्रा प्रदान करेंगे। चौमासी चवदस पर 23 जुलाई को एवं बकरा ईद पर जीवनरक्षा हेतु 21 जुलाई को सामुहिक आयंबिल का आयोजन किया गया।

पूज्यपाद आचार्यश्री का चार्तुमास मुलुंड में

मुंबई- सरस्वती पुत्र पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री रत्नसुन्दरसूरीजी म.सा. का चार्तुमास श्री मुलुंड जैन श्वेतांबर मंदिर, झावेरी रोड़, मुलुंड (वेस्ट) मुंबई-80 (महा.) में हो रहा है। पूज्यश्री का प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

किलपाक संघ में चार्तुमास

वर्धमान तपोनिधि आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के स ाथ साध्वीवर्या पूज्य श्री दिव्ययशाश्रीजी म.सा.एवं दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास किलपाक संघ के श्री मुनिसुव्र स्वामी जैन संघ में होगा। आपका भव्य चार्तुमास प्रवेश18 जुलाई 2021 को हुआ।

गुरु रामभूमि में चार्तुमास

सूरत- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा डेहलावाला एवं आचार्य भगवंत श्री मोक्षरत्नविजयजी आदि ठाणा का चार्तुमास सूरत के उपनगर गुरु रामभूमि अड़ाजण, सूरत (गुज.) में हो रहा है।

श्रीमणी लक्ष्मीतीर्थ में उपधान तप

बड़ोदरा- बड़ोदरा-भावनगर हाईवे पर स्थित जैन तीर्थ मणी लक्ष्मी में पूज्य गणिवर्य श्री श्रुतचंदविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में अठारिया एवं उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत प्रवेश 15 अक्टूबर को है, उपधान तप की माल 2 दिसंबर 2021 को होगी।

नीमच में चार्तुमास

नीमच- पूज्य साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की शिष्या-प्रशिष्या साध्वीश्री हितदर्शना श्रीजी म.सा., साध्वी श्री दिव्यनेहाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री चारुदर्शना श्रीजी म.सा. का चातुमार्सिक प्रवेश 20 जुलाई को श्री महावीर जैन मंदिर, विकास नगर, नीमच (म.प्र.) में हुआ।

गुरु कृपापात्र जैनाचार्यश्री विश्वरत्नसागरसूरीजी आदि ठाणा का हरिद्वार प्रवेश जोरदार रहा

✻ दो मास के चार्तुमास का आयोजन। ✻ आचार्स भगवंत श्रीदेवचंदसागरसूरीजी म. सा. उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. आदि साधु भगवंत ठाणा -15 साथ में ही है✻ आगामी महामांगलिक 9 अगस्त को होगी। ✻ जिनालय शुद्धिकरण में म.प्र., राजस्थान, वागड़ के 1100 जिन मंदिरों में शुद्धिकरण होगा। ✻ आगामी आयोजन तैयारी की रुपरेखा बनी।

हरिद्वार-मालवा से लगभग 1200 किलोमीटर का विहार राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरा खंडआदि प्रांतों में जबर्दस्त जैन शासन की प्रभावना करते हुए युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. ने अपने युवा शिष्यों को बड़ी प्रेरणा दी और गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की भावना के अनुकूल सबको साथ लेते हुए आपने श्रमण धर्म का जोरदार पालन कर रहे है। पंजाब, हरियाणा में शासन प्रभावना करते हुए पूज्य आचार्य भगवंत श्री देवचंदसागरसूरीजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी म. सा. के साथ विहार कर गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा, प.पू.मुनिश्रीकीर्तिरत्न सागर जी म.सा., प.पू. मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागर जी म.सा. ,प.पू.मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वल रत्न सागर जी म.सा.,प.पू.मुनि श्रीगंभीररत्न सागर जी म.सा., प.पू.मुनि प.पू. मुनि श्री रम्य रत्नसागरजी म.सा.,प.पू.मुनि श्री लब्धि रत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हरिद्वार के श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्री संघ के परिसर में करने की घोषणा हुई। ट्रस्ट के सदस्य विनंती के लिये आये थे, साथ के मुनि मंडल ने हरिद्वार के लिये पहले विहार कर दिया था। आपकी महामांगलिक पंजाब के लुधियाना शहर में 11 जुलाई को हुई। आपने महामांगलिक के बाद विहार किया। अम्बाला में आपश्री ने वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री धर्मधुरंधरसूरीजी का आर्शीवाद प्राप्त किया। यहां से तुरन्त ही विहार हरिद्वार के लिये किया जहां आपका भव्य मांगलिक प्रवेश 19 जुलाई को हुआ। प्रवेश पर मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से धर्मिष्ठों का आगमन हुआ था। श्री सागरजी जन्म जयंति, महापर्व, पर्युषण नवकार महामंत्र आराधना, शाश्वत आसोज ओली सूरी मंत्राराधना, विशिष्ट प्रवचन माला के साथ, छःरि पालित यात्रा संघ निकलने की योजना है। आपकी निश्रा में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले जिनालय शुद्धिकरण का कार्यक्रम 29 अगस्त को होने जा रहा है। राजस्थान, वागड़ और मध्यप्रदेश के मालवा आदि स्थानों के 1100 सौ जिनमंदिरों का शुद्धिकरण होगा। तैयारी आरंभ हो गई है।

कब किसकी आराधना

तपोवृद्धि के लिए-
वर्धमानस्वामी-आदिनाथ!

शान्ति के लिए-
शांतिनाथ

ब्रह्मचर्य के लिए-
नेमिनाथ

विघ्न-विदारण के लिए-
पार्श्वनाथ

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻**बीजापुर -** जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्न सेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का वि.सं. 2077 का चार्तुमास श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ मंदिर, पार्श्व भवन, गुरुकुल रोड़, बीजापुर (कर्नाटक)-586101 में है।

✻ **अहमदाबाद** -दीक्षा दानेश्वरी पूज्य आचार्य श्री श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद के श्री साबरमती जैन संघ में।

✻ **बारामती-** पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री अर्चितगुणाश्री म.सा. आदि ठाणा-8 का मंगलमय चार्तुमास बारामती जैन श्री संघ में है।

✻ **देवास-** सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मुक्तिनिलयाश्रीजी आदि ठाणा-3 का चार्तुमास सिविल लाईस जैन मंदिर देवास में है।

✻ **जालोर-**पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ जालोर (राज.) में होगा। आपका प्रवेश 19 जुलाई को हुआ।

✻ **जोधपुर-**वल्लभ सूरी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री विजय चिदानंद सूरी जी म.सा. का चार्तुमास गुलाबनगर जैन श्री संघ जोधपुर (राज.) में होगा। प्रवेश 17 जुलाई को हुआ।

✻ **मुंबई -**मुनिश्री जिनरत्न विजय जी म. सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, पायधुनी, मुंबई (महा.) में हो रहा है।

✻ **इन्दौर -**साध्वीवर्या श्री शीलरेखाश्री जी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी एवं साध्वी श्री अस्मिता श्रीजी म.सा. का चार्तुमास तिलकेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, तिलकनगर, इन्दौर (म.प्र.) में। प्रवेश 17 जुलाई को हुआ।

✻ ***रोहा*** - सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सुरेखा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री विरागरसाश्रीजी म. सा. प्रियमरसाश्रीजी म.सा. प्रियमरसा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास आदि ठाणा-3 का चार्तुमास श्री ओसवाल जैन श्वेतांबर मू. पू.श्री संघ ओसवाल भवन बाजार पेठ -रोहा जिला रायगढ रोहा (महा.) में। प्रवेश 21जुलाई को हुआ।

✻ **दाभाड़े-** आचार्य श्री विश्वकल्याण सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर, तलेगांव, दाभाड़े-410506 (महा.) में हुआ।

✻ **झालो की मंदार -** प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रविशेखार सूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय ललितशेखर सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 18 जुलाई को श्री जैन श्वेतांबर संघ, मु.पो. झालो की मंदार, तह. खामनेर, वाया नाथद्वारा जिला राजसमन्द-313321 (राज.) में हुआ।

✻ **जामनगर-** सागर समुदाय के आचार्य भगवंत श्री अक्षयचंद्र सागर सूरीजी म.सा. का पैलेस जैन श्वेतांबर श्री संघ जामनगर (गुज.) में चार्तुमास प्रवेश 21 जुलाई को हुआ।

✻ **पिपलियामण्डी-**सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री अर्हमव्रता श्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास श्री विमलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर, पिपलियामण्डी (मंदसौर) (म.प्र.) में हो रहा है।.

✻ **आवर-** पूज्य आचार्यदेव श्री नरदेव सागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास आवर (राज.) में चल रहा है। प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

✻ **सूरत-** पूज्य आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 1 बी मलबार हिल सोमनाथ महादेव रोड़, सरगम शॉपिंग सेक्टर के पीछे, सूरत-7 (गुज.) में हुआ।

94 वीं ओली का पारणा मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी ने आयड़ तीर्थ उदयपुर में किया

उदयपुर- पूज्य आचार्य भगवंत वागड़ नरेश श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. के साथ आयड़ तीर्थ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. को 94 वर्धमान तप की ओली का पारणा 21 जुलाई को हुआ। इसके पूर्व 20 जुलाई को तप की अनुमोदनार्थ तप वंदनावली का आयोजन किया गया।

✻ ***भाग्यवान बनना सबको पसन्द है फिर भाग्य निर्माण में आलस क्यों?***

गणिवर्य श्रीआदर्शरत्नसागरजी म.सा.का चातुर्मास प्रवेश मंडार जैन संघ नईदिल्ली में हुआ।

नईदिल्ली - आचार्य भगवंत श्री मृदु रत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश 17 जुलाई को श्री सुमतिनाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्रीमंडार जैन श्वेतांबर संघ में हुआ **संघवी असुबेन रुधनाथमलजी दोशी, मंडार जैन आराधना भवन मानसरोवर गार्डन पानी की टंकी के पास, नईदिल्ली (भारत) में हुआ** ।साध्वीवर्या अमित गुणा श्रीजी म. सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझरा श्रीजी का चार्तुमास भी मंडार संघ में हो रहा है।दिल्ली नगर में प्रवेश के बाद आपश्री ने दिल्ली के विभिन्न श्री संघों में पधारकर शासन प्रभावना की। 11 जुलाई को आपश्री की महामांगलिक का आयोजन श्री जैन गुजराती संघ मैं किया गया। चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत श्री पार्श्व अट्ठम तप, श्री सागरजी जन्म जयंति, नवकार महामंत्र आराधना, ज्ञान पंचमी के साथ 19 अक्टूबर से 16 दिवसीय श्री वर्धमान विद्या आराधना करेंगे।

36 दिन का श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ का संघ जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरी निकालेंगे

✻आचार्यश्री चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

उज्जैन -पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीवर्या श्री मुक्ति प्रियाश्रीजी, मृदुप्रियाश्री, हर्षप्रियाश्रीजी, ऋतुप्रिया श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री गौतम स्वामीजी की प्रतिष्ठा 11 जुलाई को श्री मनमोहन पार्श्वनाथ जिनमंदिर बडोद में हुई। यहां से आपश्री उज्जैन पधारे, आपका चार्तुमास अभ्युदयपुरम् तीर्थ में होगा। आपका चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को हुआ। आपकी निश्रा में 36 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ निकालने पर योजना का काम चल रहा है। यह संघ दिसंबर 2021 में निकलकर जनवरी 2022 में नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल होगी।

श्री भेरु विहारधाम में चार्तुमास

बड़ोल- श्री मुनिसुव्रत स्वामी रथ मंदिर जैन देरासर श्री नेमि उदय भेरु विहार धाम अहमदाबाद बगोरदा-धुंधका, हाईवेटन-बड़ोल पाटिया के पास-382460 (गुज.) में श्री नेमिसूरी समुदाय के आचार्य श्री सिद्धसेनसूरीजी आचार्य श्री सुव्रतसेनसूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास होने जा रहा है। प्रवेश 18 जुलाई को धूमधाम से हुआ।

✻ गुरुकृपा और गुणानुराग से निर्मलता बढ़ती है और चित्त शुद्धि से बुद्धि बढ़ती है।

जैनाचार्य श्री नित्यानंद सूरीजी का चार्तुमास जैतपुर में

जैतपुरा- प.पू.पंजाब केसरी आचार्य देवेश श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी म.सा. समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति, शांतिदूत, परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी म.सा., ज्ञान प्रभाकर प.पू.आ.भगवंत श्रीमद् विजय जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. तत्वचिंतक प.पू. आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा. के साथ ही गणिवर्य श्री जयकीर्तिविजयजी म.सा. निस्पृह सेवाशील मुनि पुंगव श्री लक्ष्मीचंद्र विजयजी म.सा.,श्री मोक्षनंद विजयजी म.सा.आदि ठाणा-12 का भव्य चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री आत्म वल्लभ समुद्र फाउण्डेशन विजय वल्लभ साधना केन्द्र, जैतपुरा जिला पाली, जैतपुरा (राज.) में हुआ।

साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री पूर्णप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 का भी चार्तुमास हो रहा है।

साध्वी श्री मुक्तिप्रियाश्रीजी का चार्तुमास बड़ौद में

बड़ौद-सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मुक्ति प्रियाश्रीजी, मृदुप्रियाश्री, हर्षप्रियाश्रीजी, ऋतुप्रिया श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बड़ौद में निश्चित हुआ है। 30 मई को बड़ौद श्री संघ के द्वारा आपके चार्तुमास की जय बोलाई गई। .

कालधर्म

✻ पूज्य आचार्य भगवंत श्री श्रेयांसचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. का 19 जुलाई को पालीताना में कालधर्म हुआ।

सुविशाल सागर गच्छाधिपति की अभ्यर्थता में शासन सेवक सत्कार ब्रह्मचर्य शंखनाद अखंड जाप सांकली अट्ठमतप, 82 हजार आयंबिल

✻ सद् वाचना शंखनाद, ✻ चार्तुमास प्रवेश कात्रजतीर्थ में 11 जुलाई को हुआ।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि-12 ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई आषाढ़ सुदी-1 को वर्धमान जैन आगम तीर्थ कात्रज-पूना-411046 (महा.) में हुआ। पूज्य साध्वी श्री नमिवर्षाश्रीजी का चार्तुमास भी कात्रज तीर्थ में हो रहा है। इसके साथ ही पूना में श्रमण-श्रमणी स्थकिरालय का निर्माण पू.आचार्यश्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के मार्गदर्शन से पूर्ण हुआ पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत पूज्य आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से चातुमार्सिक आराधना के दौरान 100 दिन तक रोज प्रतिक्रमण करने का मंगल अभियान शुरु हुआ है। इसके साथ ही सागर समुदाय के श्रमण भगवंतों के द्वारा 100 दिवसीय आयंबिल आराधना का शुभांरम जेठ वदी -5 दिनांक 29 जुन को आरंभ हुई जिसकी पूर्णाहुति भाद्र वदी-14 दिनांक 29 अक्टुबंर को होगी पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से 100 दिवसीय भद्रतप 29 जून से आरंभ हुआ है, तप की पूर्णाहुति 5 अक्टूबर को अंतिम उपवास के साथ होगी। पूर्णाहुति 6 अक्टूबर को होगी।

पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में संपूर्ण सागर श्रमण-श्रावक समुदाय विभिन्न तप जप क्रिया के आयोजन निरंतर कर रहे है। आपश्री की आयुष्य के 100 वर्ष पूर्ण होने तथा संयम जीवन की 82 वर्ष की कठोर चरित्र की आराधना के बेजोड़ श्रमण हैं आप। यह आयोजन तो चल ही रहे है इसके साथ ही पूज्य आचार्य भगवंत बंधु बेलड़ी श्री जिनचंद सागरसूरीजी एवं श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म.सा. के मंगल आव्हान पर 100 अजैन जिन शासन सेवक सत्कार का आयोजन हो रहा है। शताब्दी शंखनाद परिवार के बैनर पर यह कार्यक्रम होगा। पूज्य आचार्यश्री अक्षय चंदसागरसूरीजी म.सा.के द्वारा 100 दिवसीय ब्रह्मचर्य का पालन करने का शंखनाद किया गया है। पूज्यपादश्री के सम्मान की कड़ी में 100 दिवसीय अखाण्ड जाप 9 जुलाई से निरंतर प्रगतिवान है। पूज्य आचार्यश्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा.के द्वारा 100 दिवसीय सद्वाचना का शंखनाद हुआ है इसके साथ ही 100 सांकली अट्ठम तप की आराधना चल रही है। 23 जुलाई को एक और महत्वपूर्ण तपाराधना 82 हजार आयंबिल किया गया। श्रमण श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़ चढ़कर इसमें भाग लिया। इसी दिन चौमासी चवदस होने तथा चार्तुमास होने से लोगों में बहुत उत्साह था।

तपोनिष्ठ आचार्य श्री हंसरत्नसूरीजी को 81 वां मासक्षमण पूर्ण हुआ

✻ 11 जुलाई को पारणा हुआ।

मुंबई- तप की पराकाष्टा का नई परिभाषा लिखनेवाले तपवीर तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नविजयजी म.सा. को 81 वें मासक्षमण तप का भव्य पारणा महोत्सव 11 जुलाई को श्री वर्धमान श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ परेल, मुंबई (महा.) में आयोजित हुआ। पारणा का लाभ श्रीमती लीलाबहन विमलचंदजी छोगालालजी चौहान परिवार ने लिया। 32 उपवास के साथ आपश्री ने पारणा किया।

अकोला में चार्तुमास

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री गुणचंदसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आदिनाथ जैन मंदिर मोदी चौक अकोला 444001 महा. में हो रहा है।

वाणी के जादूगर का चार्तुमास प्रवेश श्री नागेश्वर महातीर्थ में जोरदार रहा

✻ मालवा के अनेक श्रीसंघ का आगमन हुआ।

नागेश्वर- विश्व विख्यात महातीर्थ श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ दादा के दरबार में आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा. 255 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री कल्पज्योति श्रीजी, श्री शासनज्योति श्रीजी,श्री कल्पदद्रुमा श्रीजी, श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी, श्री हितेषाश्रीजीश्री श्रीसुनंदिता श्रीजी, श्री अर्जिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश तीर्थ एवं आचार्यश्री की गरिमा के अनुकूल 13 जुलाई को हुआ। बाजेगाजे के साथ नाचते गाते भव्य सामैया तीर्थ प्रांगण में पहुंचा। दादा श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना करने के बाद भव्य धर्मसभा का आयोजन हुआ। स्वागत गीत के पश्चात श्री धर्मचंदजी जैन, श्री प्रसन्नजी लोढ़ा आदि ट्रस्ट मंडल के सदस्यों ने उद्बोधन दिया। डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक ने उद्बोधन दिया। पूज्य आचार्यश्री ने चार्तुमास प्रवेश पर प्रासंगिक प्रेरक प्रवचन दिया। आपने कहा- हम भी तीर्थ में आराधना करने कराने आये है, यहां ज्ञानाराधना के साथ चार पुस्तक लिखने का संकल्प पूरा करने का प्रयास करुंगा। 100/- रुपये की प्रभावना हुई।

वागड़ नरेश आचार्यश्री का आयड़ श्री संघ उदयपुर में 16 जुलाई को प्रवेश हुआ

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी मुनिश्री अर्हम्रत्न सागरजी सा.मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश 16 जुलाई को हुआ। इसके पूर्व उदयपुर के चौगान चौक में आपश्री की महामांगलिक का आयोजन किया गया। आपश्री चित्तौड़गढ़ और वागड़ प्रवेश में शासन प्रभावना करते हुए आप उदयपुर पधारें। पूज्यश्री के द्वारा चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत 18000 मुनि वंदना, अष्ट प्राप्तिहार्य तप श्री सागरजी म.सा. की जन्म जयंति बच्चों के द्वारा अष्ट प्रकार की पूजा, 36 बियासणे, जन्म कल्याणक पर स्टेज शो, आगम परिचय वाचना, शाश्वत जिनालय भावयात्रा, सूरी मंत्राराधना, महापर्व, पर्युषण शाश्वत आसोज ओली, विशिष्ट प्रवचन माला के साथ उपधान तप एवं श्री नाकोड़ा का संघ, छःरिपालित यात्रा संघ निकलने की योजना है।

कालधर्म

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेन विजयजी म.सा.का 6 जुलाई को जामनगर में कालधर्म हुआ।

225 गुरु भगवंतों का एक साथ चार्तुमास

सूरत- भक्ति योगाचार्य आचार्य भगवंत श्री यशोविजयजी म.सा., शास्त्र संशोधक आचार्य श्री मुनिचंद सूरीजी म.सा., आचार्य श्री राजपुण्यसूरीश्वरजी म.सा, आचार्यश्री भाग्येशविजय सूरीजी म.सा. तथा आचार्यश्री के समुदाय के 225 साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास एक साथ भीलड़ीयाजी तीर्थ में होगा। चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी-7, 16 जुलाई को होगा। इसकी रजा 23 मई को सूरत के श्री ऊँकार सूरी आराधना भवन में जुनाडीशा श्री संघ को दी गई।

अम्बाला में चार्तुमास

अम्बाला- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् धर्मधुरंधरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास गुरु इन्द्र समाधि मंदिर, अम्बाला (पंजाब) में होगा। प्रवेश 11 जुलाई को हुआ।

कु.दीप्ति जैन ने श्रमण पंथ स्वीकारा

लुधियाना- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री धर्मधुरंधर सूरीजी म.सा. की पावन निश्रा में कु. दीप्ति जैन का दीक्षा महोत्सव 4 जुलाई को गुरु इन्द्रदिन समाधि मंदिर अम्बाला (पंजाब) में मनाया गया।

मोहनखेड़ा में चार्तुमास

मोहनखेड़ा- गच्छाधिपति आचार्य श्री ऋषभचंदसूरीजी म.सा. के आज्ञानुवर्तीय मुनिश्री पीयुषचंद विजय जी म.सा. एवं साध्वी श्री सद्गुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री मोहनखेड़ा जैन महातीर्थ राजगढ़ (धार) (म.प्र.) में होगा।

चार्तुमास प्रवेश.... चार्तुमास प्रवेश ....

✼ **नलखेड़ा**-साध्वीवर्याश्री मुक्तिदर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मंदिर नलखेड़ (आगर) में शासन प्रभावना के साथ प्रगतिवान है। प्रवेश 13 जुलाई को हुआ।

✼ **हाटपिपल्या**-साध्वीवर्या मातृहृदया श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अर्चितगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मंदिर हाटपिपल्या (देवास) (म.प्र.) में शासन प्रभावना के साथ चल रहा है। प्रवेश 18 जुलाई को हुआ था।

✼ **मुंबई** -साध्वीवर्या श्री अमित गुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या आदि ठाणा-16 का चार्तुमास श्री चन्द्रप्रभ जैन मंदिर, 309 जैन मंदिर रोड़, बांद्रा (वेस्ट) मुंबई (महा.) एवं श्री फोर्ट जैन संघ, श्री शांतिनाथ जैन मंदिर, 194 बोरा बाजार, सी.एस.टी. रेल्वे स्टेशन के पास, फोर्ट-मुंबई-400001 (महा.) में शासन प्रभावना के साथ चल रहा है।

✼ **बड़ी सादड़ी**-सागर समुदाय के साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जैन आराधना भवन, नीमच रोड़,बड़ी सादड़ी जिला चित्तौड़गढ़ में हो रहा है। आपका प्रवेश 17 जुलाई को हुआ।

✼ **नागदा**-प.पू.मुनिराज श्री चन्द्रयश विजयजी म.सा. आदि ठाण का भव्य चार्तुमास प्रवेश18 जुलाई 2021 को प्रातः 8.30 बजे श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन श्री संघ नागदा जंक्शन तह. व जिला उज्जैन (म.प्र.) में हुआ।

✼ **मदुराई** - प.पू. वरिष्ठ मुनिराज श्री हितेशचंद्रविजयजी म.सा.आदि ठाण का भव्य चार्तुमास प्रवेश 22 जुलाई को श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्र सूरि जैन ट्रस्ट, श्री यतीन्द्र भवन, मंजनकारा स्ट्रीट, मदुराई (त.ना.) में हुआ।

✼ **अयोध्यापुरम**- प.पूज्य आचायदेव श्री जिनचन्द्रसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई 2021 को जैन आर्य तीर्थ अयोध्यापुरम्, अहमदाबाद-पालीताना हाईवे, नवागामढाल, वल्लभीपुर, जिला भावनगर (गुज.) में हुआ।

✼ **देवास**-प.पू. मुनिराज श्री विजय राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. का भव्य चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को श्री संभवनाथ जैन संघ, देवास (म.प्र.) में हुआ।

✼ **भुज**-आचार्य श्री विजयकलापूर्ण सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्री विजयपूर्णचंद्र सूरीजी म.सा.आदि ठाणा -6 का चार्तुमास श्री सुविधिनाथ जैन मंदिर, जैन भवन माधापर (कच्छ) (गुज.) में होगा। प्रवेश 9 जुलाई को हुआ।

✼ **भाण्डवपुर**-प.पू.आचार्यदेव श्री विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश 20 जुलाई को प्रातः 10 बजे श्री महावीर जैन श्वेतांबर पेढ़ी मु.पो.भाण्डवपुर तीर्थ, जिला जालोर (राज.) में हुआ।

✼**पालीताना**- प.पू.गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को श्री जिन हरिविहार धर्मशाला , पालीताना (गुज.) में हुआ।

✼ **जोधपुर**-मुनिश्री मणिप्रभ विजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री हर्षप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास गुलाब नगर जैन संघ, पालरोड़, खेमेकर का कुआ, जोधपुर (राज.) में हो रहा है, प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

✼ **हालोल** -आचार्यश्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री नवकार आराधना भवन, 53 अलकापुरी सोसायटी गोधरा रोड़, हालोल (गोधरा) (गुज.) में हुआ।

✼ **सरेलाखोड़ी**-पूज्य पंयांस प्रवर श्री पद्मबोधि विजयजी म. सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को श्री घोड़दौड़रोड़जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ,सरेलाखोड़ी,सूरत (गुज.)में हुआ।

✼ **चैन्नई**-श्री संकल्प जैन श्वेतांबर श्री संघ में प्रथम बार आचार्यश्री मेघदर्शन सूरीश्वरजी (सुशिष्य आचार्य श्री चन्द्रशेखरसूरीजी महाराजा) एवं साध्वी श्री नंदीवर्धना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री संकल्प जैन संघ-अभिनंदन अपार्टमेंट पट्टालम्, चैन्नई (तमिलनाडु) में हुआ।

✼ **चैन्नई**-आचार्य भगवंत श्री तीर्थभद्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री वेपेरी जैन श्वेतांबर मंदिर, पुलिस कमिश्नर ऑफिस के सामने, वेपेरी, चैन्नई (तमिलनाडु) में हुआ।

✼ **इन्दौर**-कालानी नगर इन्दौर (म.प्र.) श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री

संघ में पूज्य साध्वी श्री सूर्यकांताश्रीजी, श्री सुधाशंनाश्रीजी आदि ठाणा का मंगल प्रवेश चार्तुमास हेतु 13 जुलाई को हुआ।

✲ मंदसौर - सागर समुदाय वर्तीय साध्वी श्री मोक्षज्योतिश्रीजी म.सा. का चार्तुमास रुप-चांद जैन आराधना भवन, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.) में हो रहा है।आपका प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

✲ बैंगलोर- आचार्य श्री देवेन्द्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बैंगलोर के श्री राजस्थानी जैन मूर्ति पूजक संघ 30 क्रास 9 वीं मेनरोड़, 4 ब्लाक, जयनगर, बसस्टेण्ड के पास, बैंगलोर-560011 (कर्नाटक) में जोरदार प्रवेश 11 जुलाई को हुआ।

✲ उज्जैन-पूज्य खारतरगच्छ गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशल मुनिश्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश साध्वी श्री जयशिशुश्रीजी म.सा.आदि ठाणा के साथ 20 जुलाई को हुआ। चार्तुमास श्री शातिनाथ जिन मंदिर छोटा सराफा शांतिनाथ की गली, उज्जैन (म.प्र.) में हो रहा है।

✲अम्बाला-श्री धार्मधुरंदर सूरीजी म.सा.मार्केट,जी.टी.रोड़, अम्बाला (पंजाब) में 18 जुलाई को हुआ।

✲ मुंबई- आचार्यदेव श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री चंद्र प्रभ स्वामी जैन देरासर सेठ श्री सारा भाई वाड़ीलाल देरासर-186 आर. आर.एम.रोड़, प्रार्थना समाज, मुंबई-400004 (महा.) में हुआ।

✲मोहनखेड़ा- मुनिश्री पीयुष चंद्रविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन मंदिर, मोहनखेड़ा जैन तीर्थ, राजगढ़ (धार) (म.प्र.) में हुआ।

✲भीलवाड़ा - आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्न विजय सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गांधी नगर, कांचीपुरम्, नवकार ग्रीन नवकार रेजीडेंसी भीलवाड़ा (राज.) में हो रहा है। आपका प्रवेश 11 जुलाई को हुआ।

✲ जयपुर -अध्यात्मयोगी पूज्य महेन्द्र सागरजी एवं पूज्य श्री मनीष सागर जी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर खारतरगच्छ संघ 4018 शिवाजीराम भवन, एम.एस.बी.का रास्ता जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) के तत्वावधान में मोहनवाड़ी गलता गेट जयपुर (राज.) में हुआ।

✲ गांधीनगर-राष्ट्र संत आचार्य देवेश श्री पद्मसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चातुमार्सिक प्रवेश 18 जुलाई को श्री गांधीनगर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ बसस्टेण्ड के सामने, ध-रोड़, सेक्टर-22, गांधीनगर-383022 (गुज.) में हुआ।

✲पाटण- त्रिस्तुतिक संघ के मुनिराज श्री चरित्ररत्नविजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को त्रिस्तुतिक उपाश्रय पंचासर जैन मंदिर के पीछे-पाटण (गुज.) में हुआ।

✲ मुंबई-गच्छाधिपति प.पू. आचार्यश्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीजी म. सा. का चार्तुमास प्रवेश दिनांक17 जुलाई को श्री गीतांजली श्वे. मू. पू. जैन संघ, सोनी टॉवर के सामने, सांई बाग नगर, हरिदास नगर, बोरीवली (वे.) मुंबई-400092 (महा.) में हुआ।

✲धुले- प.पू.आचार्य श्री विजय राजचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री वीशा श्रीमाली श्वे. मू.पू.जैन संघ प्रीतम शरद जैन 2104, जैन मंदिर के सामने, जैन गली, वच्छे गांव, शीरपुर जिला धुले-425405 (महा.) में हुआ।

✲ मुंबई- बंधुबेलड़ी प.पू. मुनिराज श्री पुनीतप्रभ विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ श्वे.मू.पू. जैन संघ, रोड़ नंबर 7, दौलतनगर, बोरीवली (ई), मुंबई-400092 (महा.) में हुआ।

✲ मुंबई-प.पू. मुनिराज श्री निर्मोहप्रभ विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री वर्धमानस्वामी श्वे.मू.पू.जैन संघ, विकास एपार्टमेंट, ग्राउण्ड फ्लोर, डाभी चेम्बर बाग,वडालारोड़, परेल (ई), मुंबई-400012 (महा.) में हुआ।

✲मुंबई- प.पू. मुनिराज श्री दिक्षीतप्रभ विजयजी म.सा.आदि ठाणा-2 का चार्तुमास प्रवेश सेठ झवेरचंद प्रतापचंद सुपार्श्वनाथ जैन संघ, न्यू इन्द्र भवन 101 वालकेश्वर रोड़, मुंबई-6 (महा.) में हुआ।

✲ मुंबई-प.पू.मुनिराज श्री जयंकरप्रभ विजयजी म.सा.आदि ठाणा-2 का चार्तुमास प्रवेश श्री सम्यक उपासना जैन संघ, बी विंग, उपाश्रय, पीएल लेवल शांतिकमल टावर, भाई बालमुकुंद रोड़ चींचपोकली (ई), लालबाग, मुंबई-12 (महा.) में हुआ।

✲ मक्सी- पूज्य साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मननकीर्ति श्रीजी एवं धैर्यकीर्तिश्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, श्री मक्सी पार्श्वनाथ मंदिर

मक्सी (शाजापुर) (म.प्र.) में हुआ।

❋ **बोलिया-** पूज्य साध्वी श्री जिनेशरत्नाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा ने श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में बोलियां जैन श्वेतांबर श्रीसंघ में चार्तुमास हेतु 13 जुलाई को विहार किया। आपका चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

❋ **गोधरा-**साध्वीश्री अनंतगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री शांतिनाथ जैन देरासर, पुलिस चौकी नं. 2 के पास वोराबाद टावर रोड़, गोधरा (गुज). में हो रहा है प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

❋ **बाड़मेर -** अवंति तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.के आज्ञानुवर्ति वसीमालाणी रत्न शिरोमणी ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक प.पू.आ.देवेश श्री जिनमनोज्ञ सूरीजी म.सा.आदि ठाणा 2 का इस वर्ष चार्तुमास धोरीमुन्ना (जिला-बाड़मेर) में हो रहा है।

❋ **सूरत**- सूरत महानगर बाड़मेर जैन श्री संघ सूरत के तत्वावधान में अवंति तीर्थोद्धारक, खरतर गच्छा धिपति प.पू.आ.भगवंत श्री जिन मणि प्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ति प्रवचन प्रभावक नूतन गणिवर्य श्री मनित प्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास हो रहा है।

❋ **बाड़मेर** - के ढाणी धर्मशाला के प्रांगण में बहुश्रुत-आगमोद्धारक परम पूज्य श्री सागरजी म.सा. समुदाय के वर्धमान तपोनिधि शिष्य, शिल्पी प.पू. आ.भगवंत श्री नयचन्द्रसागर सूरीजी म.सा. के शिष्यरत्न बाड़मेर रत्न प.पू. मुनिराज श्री सुमतिचन्द्र सागरजी म. सा.,प.पू.मुनिराजश्री शीतलचन्द्र सागर जी म.सा.आदि ठाणा-2 को वर्ष 2021 के चार्तुमास ढाणी धर्मशाला में करने की अनुमति प्रदान की गई तथा जय बोली गई।

❋ **मुंबई-** महाराष्ट्र की मुंबई स्थित भांडुप उपनगर में राजस्थान-दक्षिण दीपक, साहित्य दिवाकर, सौम्य स्वभावी, अचल गच्छाधिपति प.पू. आ.भगवंत श्री कलाप्रभसागर सूरीजी म.सा के आज्ञानुवर्ति मुनिराज श्री उदय रत्न सागरजी म.सा. एवं युवा प्रवचन कार मुनिराज श्री गुणवल्लभ सागरजी म.सा.आदि ठाणा का आषाढ़-8, 2 जुलाई 2021 का गाजे-बाजे के साथ भव्य चार्तुमास 2021 प्रवेश हुआ।

❋ **मुंबई-** मुंबई के माटुंगा में श्री माटुंगा कच्छी मूर्तिपूजक श्वेतांबर जैन संघ के तत्वावधान में राजस्थान-दक्षिण दीपक, सौम्य स्वभावी, साहित्य दिवाकर अचलगच्छाधिपति प.पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् कलाप्रभसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-20 का भव्यातिभव्य चार्तुमास नगर प्रवेश आषाढ़वद-10, दिनांक 4 जुलाई को प्रातः मंगल मुर्हूत में हुआ।

❋ **भूज-** कच्छ के पाट नगर के लिये श्री भूज के श्री चिंतामणी पार्श्व नाथ दादा के दरबार में श्री भूज अचल गच्छ जैन संघ के तत्वावधान में साहित्य सम्राट, अचल गच्छाधिपति प. पू.आ.भ.श्री कलाप्रभसागर सूरीजी म.सा. के आज्ञानुवर्ति मुनिराज श्री राज रत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा-8 का तप त्याग ज्ञान-ध्यान भक्तिमय चार्तुमास मंगल प्रवेश आषाढ़ सुद-10, दिनांक 18 जुलाई को प्रातः शुभ मुर्हूत में स्वागत सामैया के साथ हुआ।

❋ **सीतामऊ-** सागर समुदाय के पूज्य साध्वीवर्या श्री मेघवर्षा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास जैन आराधना भवन आजाद चौक सदर बाजार, सीतामऊ (मंदसौर) (म.प्र.) में हो रहा है। आपका प्रवेश 16 जुलाई को हुआ।

❋ **पालीताना-** सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्र श्रीजी म.सा.,साध्वी श्री चारुदर्शाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नित्य चन्द्र दर्शन धर्मशाला, तलेटी रोड़ पालीताना (भावनगर) (गुज.) में हो रहा है। प्रवेश 18 जुलाई को हुआ।

❋ **इन्दौर-** पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचंद्रसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर उपाश्रय रेसकोर्स रोड़ इन्दौर (म.प्र.) में हो रहा है। प्रवेश 16 जुलाई को हुआ।

❋ **मुंबई-**पंन्यास श्री विराग सागरजी म.सा. मुनिश्री विनित सागर जी म.सा., विनम्रसागरजी आदि ठाणा के साथ साध्वी संयमिता श्रीजी का चार्तुमास श्री भक्ति पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गुदेंचा गार्डन, सी.एच.एस.लि. ई विंग-पोडम लेवल दाताराम खेमकर मार्ग, लालबाग, चिंक पोकली (ई) मुंबई-12 (महा.) में हो रहा है। प्रवेश 17 जुलाई को हुआ।

❋

❋ **सूरत-** आ.श्री जिनमणीप्रभ सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश 18 जुलाई को कुशल दर्शन दादावाड़ी, पर्वत पटिया, सूरत (गुज.) में हुआ।

अनुयोगाचार्यश्री का चार्तुमास

इन्दौर- अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश श्री वीरमणी स्वामी जैन मंदिर ओएसिस टाउनशीप शिवकुंज स्कूल के पास, जलसा मैरेज गार्डन के आगे, बायपास रोड़, निपानिया इन्दौर (म.प्र.) में 18 जुलाई को हुआ।

प्राचीन महातीर्थ श्री मक्सी पार्श्वनाथ दादा के जिनालय एवं 24 देहरी पर ध्वजारोहण किया गया

19 जुलाई को देपालपुर में भव्य प्रवेश हुआ

✻ वरिष्ठ आचार्यदेव श्री नरदेवसागरसूरीजी की निश्रा रही।

✻ महामंत्र जाप एवं सामुहिक आयंबिल आराधना हुई।

✻ साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी का चार्तुमास भी साथ ही होगा।

देपालपुर- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी आदि ठाणा का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश देपालपुर में 19 जुलाई को बड़ी धूमधाम के साथ हुआ। देपालपुर के युवा चार्तुमास की कमान वीडल श्रावकों के सहयोग से संभाल रहे है। नाचते गाते नवयुवकों के साथ सामैया जोरदार रहा। प्रवेश के अवसर पर गुजरात, राजस्थान , मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों से गुरुभक्तों का आगमन हुआ था। प्रवेश के बाद भव्य धर्मसभा का आयोजन किया गया। गुरुभक्तों ने अपने उद्‌बोधान दिये । डॉ. सुभाष जैन, ''आगमोद्धारक'' ने भी ऊर्जावान वक्तव्य दिया। प्रवेश पर 100 रुपये गुड एवं श्रीफल की प्रभावना हुई चार्तुमास के लिये एक बड़ी राशि की टीप हुई है। वैयावच्य सेवी प्रवर मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 93 वीं ओली की आराधना चल रही है। इसके पूर्व पूज्यश्री मक्सी तीर्थ में विराजमान थे वहां पूज्यश्री की निश्रा में श्री मक्सी पार्श्वनाथ दादा के साथ 24 देहरी और देवी-देवताओं का देहरी पर भव्य ध्वजारोहण किया गया। मुख्य दादा पार्श्वनाथ प्रभु की ध्वजा चढ़ाने का लाभ डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' ने लिया। यहां पर पूज्यश्री की निश्रा में महामंत्र जाप और सामुहिक आयंबिल तप के आयोजन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया।

अहंकार की टकराहट राजा और संन्यासी में

एक गुरुकुल में राजकुमार और राजपुरोहित का पुत्र दोनों पढ़ रहे थे। दोनों बुद्धिमान थे। दोनों में ईर्ष्याभाव था परस्पर। एक को राजपुत्र होने का घमंड और दूसरे को पुरोहित पुत्र होने का अभिमान। अध्ययन पूर्ण कर ब्रह्मचर्याश्रम से गृहस्थाश्रम के लिए घर लौटे दोनों। राजकुमार राजा बन गया और पुरोहितपुत्र संन्यासी बन गया। इधर राजा अपनी सेनाएं बढ़ाता रहा, सीमाएं बढ़ाता रहा और बड़ा प्रतापी राजा बन गया। उधर तपस्वी बड़े-बड़े त्याग, यज्ञयाग और क्रियाकांड से खूब ख्याति प्राप्त, बड़ा संन्यासी बना और एक दिन उस नगरी में आया। राजा ने उसकी कीर्ति सुनी और जाना कि यह वही संन्यासी है जो गुरुकुल में साथ पढ़ता था। सहपाठी के नाते और अपने प्रताप को दर्शाने हेतु राजा ने मंत्री भेजा कि उन्हें भोजन पर निमंत्रण दो। मंत्री ने विनंती की-''महाराज ! कल के भोजन का निमंत्रण स्वीकार करें।'' संन्यासी ने बड़ी रुक्षता से इन्कार किया। मंत्री हाथ जोड़ते रहे और संन्यासी हाथ झाड़कर इन्कार करता रहा। आखिर मंत्री ने किस तरह मना लिया। संन्यासी अपनी त्याग की पराकाष्ठा प्रदर्शित करना चाहता था।

राजा ने अपनी शानशौकत दिखाने के लिये खूब नगरी को सजाया, पथ सजायें यहां तक कि गलीचे बिछवा दिये पथ पर। उधर संन्यासी को पता चला कि राजा अपनी धनदौलत दिखा रहा है और किमती कालीन मार्ग में बिछा दिये है तो संन्यासी जाकर खूब कीचड़ में अपने पैरों को एवं शरीर को सान कर आया। जब पहुंचे राजमहल, खूब मिले-जुले और तब राजा हंस पड़ा। संन्यासी ने पूछा क्यों हंस रहे हो ? राजा ने कहा- जिस मार्ग से आपका आना था उधर कोई तालाब नहीं था बल्कि सूखी जमीन थी फिर भी इन कीचड़ सने पावों से आपका आगमन सूचित कर रहा है कि दोनों अभी उसी जगह खड़े है जहां बचपन में खड़े थे। एक इंच भी सरके नहीं वहां से। मेरा मार्ग में कालीन बिछाना और आपका पैरों में कीचड़ सानकर आना। क्या फर्क है दोनों में ? अहंकार साधना का सबसे बड़ा दूषण है, बाधक है ! जब अहंकार की जड़ें नष्ट होती है तब आध्यात्मिक भूमिका तैयार होती है। सीप का मुंह खुलता है, तब ज्ञान की एक बूंद शास्त्र का एक वाक्य भी मोती बनता है।

भ.ऋषभदेव व श्रेयांसकुमार के 9 भव का संबंध

1-ललितांग देव- स्वयंप्रभा देवी 2- वज्रजंघ राजा-श्रीमती राणी 3- युगलिक- युगलिक 4- सौधर्म देवलोक में देव- देव (मित्र) 5- जीवानंद वैद्य- केशव (मित्र) 6- अच्युत देवलोक में देव- देव (मित्र) 7- वज्रनाभचक्री- सारथी 8- सर्वार्थसिद्ध विमान में देव- देव 9- भ. ऋषभदेव- श्रेयांस कुमार

चार्तुमास आराधना : याद में रखने योग्य महत्वपूर्ण तिथि

✻ आषाढ़सुदी-14	23 जुलाई 2021	शुक्रवार	चार्तुमास -आरंभ हो गया
✻ श्रावण वदी-30	8 अगस्त 2021	रविवार	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री का 146 वां जन्मदिवस
✻ श्रावण सुदी-4	12 अगस्त 2021	गुरुवार	मासघर मासक्षमण लेने का दिन
✻ श्रावण वदी-5	13 अगस्त 2021	शुक्रवार	श्री नेमिनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
✻ श्रावण सुदी-6	14 अगस्त 2021	शनिवार	श्री नेमिनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक
✻ भादवा वदी-11	3 सितम्बर 2021	शुक्रवार	पर्वाधिराज पर्युषण का आरम्भ अट्ठाईघर
✻ भादवा वदी-30	6 सितम्बर 2021	सोमवार	कल्पसूत्र वाचन
✻ भादवा सुदी-1	7 सितम्बर 2021	मंगलवार	श्री महावीर प्रभु जन्म वांचन, चौदह स्वप्नाजी दर्शन
✻ भादवा सुदी-2	8 सितम्बर 2021	बुधवार	तेलाघर
✻ भादवा सुदी-10	10 सितम्बर 2021	शुक्रवार	संवत्सरी महापर्व पारसा, सूत्र वांचन सवंत्सरी प्रतिक्रमण, क्षमापना,
✻ भादवा सुदी-11	17 सितम्बर 2021	शुक्रवार	जगतगुरुश्री हीरसूरीजी का स्वर्गारोहण दिन वि.सं. 1652
✻ आसोज सुदी-5	10 अक्टूबर 2021	रविवार	श्री यक्षेन्द्र मणिभद्र दादा का स्मृति दिन
✻ आसोज सुदी-7	12 अक्टूबर 2021	मंगलवार	आसोज नवपद ओली आरम्भ
✻ कार्तिक वदी-13	2 नवम्बर 2021	मंगलवार	धनतेरस
✻ कार्तिक वदी-14	3 नवम्बर 2021	बुधवार	काली चवदस
✻ कार्तिक वदी-30	4 नवम्बर 2021	गुरुवार	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा महापूजन श्री वीर प्रभु निर्वाण दिवस
✻ कार्तिक सुदी- 1	5 नवम्बर 2021	शुक्रवार	नूतन वर्षारंभ, वीर निर्वाण संवत् 2548 श्री गौतमस्वामीजी केवलज्ञान
✻ कार्तिक सुदी-5	9 नवम्बर 2021	मंगलवार	ज्ञान पंचमी
✻ कार्तिक सुदी-14	18 नवम्बर 2021	गुरुवार	चौमासी चवदस, चार्तुमास संपूर्ण
✻ कार्तिक सुदी-14	19 नवम्बर 2021	शुक्रवार	श्री सिद्धाचल यात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य का जन्म दिन

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनप्रसाद का नवनिर्माण 18 अगस्त को प्रथम ढांकना विधान के साथ आरंभ होगा

✻ मंदिरजी का नक्क्षा पास हुआ : मार्बल के लिये एग्रीमेंट हुआ।

भोपावर- दादा शांतिनाथ प्रभु की प्रथम वर्षगांठ पर भोपावर महातीर्थ में पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.की मंगल उपस्थिति में श्री अमीझरा पार्श्वनाथ दादा के भव्य त्रिलोकदर्शयी जिनप्रसाद के नवनिर्माण के लिये 16 मार्च को श्री अमीझरा ट्रस्ट मंडल की बैठक हुई थी। बैठक में ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाश सिरोही के द्वारा भट्ट शिलारोपण के लिये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. से मंगल मुर्हूत प्रदान करने पर आग्रह किया गया। पूज्यश्री ने 8 मई को एक दिवसीय आयोजन के साथ भट्ट शिलारोपण के साथ भव्य जिनप्रसाद निर्माण का संकल्प दोहराया किन्तु कोरोना के कारण यह संभव नही हो पाया था अब 18 अगस्त को एक दिवसीय आयोजन के साथ भट्ट शिलारोपण के साथ भव्य जिनप्रसाद का निर्माण आरंभ होगा प्रथम ढांकना विधान के साथ भट्ट शिलारोपण का कार्य विजय मुर्हूत 11.30 बजे सम्पन्न होगा। लाभार्थी श्रीमती असुबहन रघुनाथमलजी समरथमलजी दिनेशजी आदि दोषी परिवार है।

श्री रमेशजी मुथा ने कहा कि- मंदिरजी निर्माण के सभी नक्क्षे निश्चित कर लिये गये है देवद्रव्य के लिये अपील तैयार है तथा दादाश्री अमीझरा पार्श्वप्रभु और तीर्थ के सभी देवी-देवताओं से विनंती कर निर्माण की आज्ञा भी प्राप्त कर शीघ्र ही निर्माण सम्पन्न हो ऐसा करेगें। ट्रस्ट मंडल की बैठक अमीझरा में 17 अगस्त को रखी गई है।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी का जबुंदीप में चार्तुमासिक प्रवेश 11 जुलाई को हुआ

पालीताना- सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्रसागर सूरीजी म.सा.,आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 11 जुलाई को जम्बुदीप परिवार में हुआ। **आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी का चार्तुमास अहमदाबाद में हो रहा है।** प्रवेश पर पूज्यश्री के सामायिक प्रवचन हुए। बड़ी संख्या में साधु-साध्वीजी की उपस्थिति रही। जम्बुद्वीप परिसर में उपाश्रय में लगे टेंट में आग भी लग गई थी इसमें नुकसान भी हुआ है।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन-प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

पूना में 24 जिन तप का आयोजन

पूना- गुदेंचा गार्डन में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय के पंन्यास प्रवर श्री विराग सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां 24 जिन तप का आयोजन आरंभ हुआ। तपाराधना के अंतर्गत 21 उपवास, 21 बियासणा, 1 छट्ठ तथा 1 अट्ठम तप होगा। कुल 50 दिन की आराधना 23 जुलाई से आरंभ हुई और पूर्णाहुति 10 सितंबर को होगी।

✻ जीवन एक संयोग है, यहीं मिले यहीं बिछुड़ जायेंगे। संयोगी पर्याय का अर्थ भी यहीं है और इति भी यहीं। जन्म-मरण के क्रम को समझाने वाला ही ज्ञानी है।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	श्रावण वदी-10	मंगलवार	3-8-2021	रोहिणी
2-	श्रावण वदी-30	रविवार	8-8-2021	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री आनंदसागरसूरीजी महाराजा का 146 वां जन्म दिवस
3-	श्रावण सुदी-3	बुधवार	11-8-2021	श्री सीमंधरस्वामी आदि 20 विरामान जिन का मोक्ष कल्याणक दिन
4-	श्रावण सुदी-4	गुरुवार	12-8-2021	मास का घर मासक्षमण लेने का दिन
5-	श्रावण सुदी-5	शुक्रवार	13-8-2021	श्री नेमीनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
6-	श्रावण सुदी-6	शनिवार	14-8-2021	श्री नेमीनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक
7-	श्रावण सुदी-8	सोमवार	16-8-2021	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक
8-	भादवा वदी-5	शुक्रवार	27-8-2021	पन्द्रह का घर
9-	भादवा वदी-9	मंगलवार	31-8-2021	रोहिणी

पंचक :—

आरम्भः- श्रावण सुद-15 रविवार, दिनांक 22-8-2021, समय- 07.58 से

समाप्तः- भादवा वदी-4 गुरुवार, दिनांक 26-8-2021, समय- 22.30 से

"आगमोद्धारक" का आगामी अंक सितंबर 2021 "पर्युषण पर्व विशेषांक" होगा। आपकी रचनाएं भेजिए

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✻ संत या साधक बनें या न बनें पर अपने जीवन की दीवार पर सज्जनता का चित्र अवश्य उभारें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

गुरु आत्म वल्लभ के तप त्याग से सिंचित पंजाब राज्य में
गुरु रत्नाकर के पुण्य प्रभाव से फलीभुत संघ शिरोमणी नाम से प्रख्यात
लुधियाना नगर में महाराजा का महाप्रवेश... ऐतिहासिक महामांगलिक...

नवरत्न गुरु कृपा प्राप्त, प.पु. युवा हृदय सम्राट आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के श्रीमुख से हजारों भक्तों की उपस्थित मे मालवभूषण सूरिजी की महामांगलिक सम्पन्न

वर्ष 26 | आषाढ़-श्रावण | अगस्त-2021 | अंक 08 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897